वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक
अक्टूबर 16-31, 2025

हिन्दू विश्व

हिन्दूओं को भी है धार्मिक स्वतंत्रता और न्याय पाने का मौलिक अधिकार

@eHinduVishwa
/HinduVishwa

भगवान राम की लीला को रामायण के रूप में उकेरने वाले भगवान वाल्मीकि जी के धाम अमृतसर से अखण्ड ज्योति के दिल्ली आगमन पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप के केन्द्रीय अध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी

विहिप-धर्मप्रसार विभाग द्वारा प्रयागराज स्थित पू. वासुदेवानंद सरस्वती जी महाराज के आश्रम में 12 सितम्बर को हिन्दू हृदयसम्राट श्री अशोक सिंहल जी के जन्मदिवस पर धर्मप्रसार परिचय पुस्तक का विमोचन संगठन महामंत्री श्री मिलिंद पराडे, पूज्य संत सोमलिंगम जी महाराज (कर्नाटक), स्वामी कमल जी महाराज (झाबुआ), पू. मुकुन्द जी महाराज (वृन्दावन), पू. सनत जी महाराज (उड़ीसा-पुरी), पू. शम्भू जी महाराज (कलकत्ता), पू. रामस्वरूप जी महाराज एवं धर्मप्रसार के अ.भा. प्रमुख श्री सुधांशुमोहन पटनायक द्वारा किया गया।

प्रयागराज में भारतीय जनसेवा संस्थान के साधारण सभा अधिवेशन में जनसेवा संस्थान की नूतन प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति का गठन हुआ। सभा में जनसेवा संस्थान के पदाधिकारियों के साथ उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे।

फेरुपुर, हरिद्वार में नशामुक्त युवा, विकसित भारत कार्यक्रम को संबोधित करते बजरंग दल के रा. संयोजक श्री नीरज दौनेरिया जी

इस पक्ष में ....

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

पांच मुखों से युक्त पात्र में स्थित चावल को सूर्य की गर्मी उबालती है। इस ओदन यज्ञ द्वारा समस्त लोकों को अभिलषित फल की प्राप्ति होती है। जिस ब्रह्मौदन के ऊपर और नीचे समुद्र, द्युलोक तथा पृथ्वी तीनों ही आश्रित हैं। उसके उच्छिष्ट अंश से छ: अस्सी (680) देव प्रकट हुए। – अथर्ववेद

16-31 अक्टूबर, 2025
कार्तिक कृष्ण - शुक्ल पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. – 2082, युगाब्द– 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. – 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. – 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग – 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली–110022–05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना
- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज – 28

अमृतसर से अखण्ड ज्योति का दिल्ली आगमन	07
नशा मुक्त युवा : विकसित भारत की आधारशिला	08
आखिर कौन कर रहा है सांप्रदायिक तनाव भड़काने की साजिश?	10
बहादराबाद : वात्सल्य वाटिका में मनाया गया अशोक सिंहल जी का 99वां जन्मोत्सव	11
गोरखनाथ मठ और सामाजिक समरसता	12
सेवा व संघर्ष के सौ वर्ष	14
विहिप केन्द्रीय अध्यक्ष की झारखंड राज्यपाल से भेंट	16
व्यक्ति और राष्ट्र के विकास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा का महत्व	17
प्रकृति की नाराजगी को नहीं समझा तो मानव अस्तित्व खतरे में	20
आयुर्वेद के आहार–विषयक महावाक्य	22
जिहादी उन्माद व आक्रामकता पर लगे लगाम : विहिप'	23
विश्व हिन्दू परिषद–धर्मप्रसार विभाग	24
विहिप द्वारा आयोजित सामाजिक समरसता संगोष्ठी	25
यूरोप में हिन्दू सम्मेलन	26

सुभाषित

न तथा बलवीर्याभ्यां, जयन्ति विजिगीषवः।
यथा सत्यानृशंस्याभ्यां, धर्मेणैवोद्यमेन च।।

विजय की इच्छा रखनेवाले शूरवीर अपने बल और पराक्रम से वैसी विजय नहीं पाते, जैसी कि सत्य, सज्जनता, धर्म तथा उत्साह से प्राप्त कर लेते हैं।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

हिंदुओं को भी है धर्म-स्वातंत्र्य का मौलिक अधिकार

भारत का संविधान केवल कागज़ का दस्तावेज़ नहीं, बल्कि यह इस राष्ट्र की आत्मा का विधान है–जिसका मूल मंत्र है ***"सबका समान अधिकार, सबका समान सम्मान।"*** इसी सिद्धांत पर अनुच्छेद 25 से 28 तक नागरिकों को धर्म की स्वतंत्रता का मौलिक अधिकार प्रदान किया गया है। लेकिन विडंबना यह है कि आज यही अधिकार जब हिंदू अपने लिए मांगता है, तो उसे कट्टरपंथी या साम्प्रदायिक करार दे दिया जाता है। क्या भारत में "धर्म–स्वातंत्र्य" केवल अल्पसंख्यकों का अधिकार बनकर रह गया है? क्या हिंदू बहुसंख्यक होने के कारण अपने ही देश में अपने धर्म की रक्षा और प्रचार नहीं कर सकता? यह प्रश्न आज हर जागरूक नागरिक के मन में गूंज रहा है। यूं संविधान का अनुच्छेद 25 कहता है – ***"प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म का पालन करने, प्रचार करने और प्रसार करने का समान अधिकार है।"*** यह अधिकार देश के प्रत्येक नागरिक को समान रूप से प्राप्त है। परंतु व्यवहार में देखा जाए तो इस समानता का संतुलन बिगड़ चुका है।

जहाँ एक ओर मिशनरी संगठन खुलेआम धर्मांतरण के अभियान चला रहे हैं, वहीं यदि कोई हिंदू संगठन अपने मंदिर में शास्त्र–वाचन या गौसेवा का आयोजन करे, या, लव जिहाद से अपनी बहन बेटियों की रक्षा करे, तो उसे सांप्रदायिकता का तमगा देकर बदनाम किया जाता है। मीडिया और कुछ तथाकथित "सेकुलर" समूहों ने एक ऐसा भ्रम रच दिया है कि धर्म की बात करना केवल अल्पसंख्यक समुदायों का विशेषाधिकार है, जबकि हिंदू के लिए यह "कट्टरता" मानी जाती है। हिंदू समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सहिष्णुता रही है। ***"सर्वे भवन्तु सुखिनः"*** का आदर्श रखने वाला यह समाज कभी किसी पर अपने मत का दबाव नहीं डालता। किंतु यही सहिष्णुता अब उसकी कमजोरी समझ ली गई है। धर्मांतरण के नाम पर चल रहे छल, प्रलोभन और झूठे प्रचार के माध्यम से अनेक प्रदेशों में हिंदू समाज के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगने लगा है। क्या यह अन्याय नहीं कि जो व्यक्ति अपने पूर्वजों की परंपरा, अपने ईश्वर और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए खड़ा होता है, उसे कट्टर कह दिया जाता है? जबकि वही अधिकार दूसरे समुदायों के लिए 'धर्म–स्वातंत्र्य' कहलाता है।

यह समझना आवश्यक है कि हिंदू धर्म–स्वातंत्र्य की मांग किसी अन्य धर्म के विरोध में नहीं है। हिंदू धर्म तो स्वयं ***'एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति'*** का उपासक है। परंतु अपने धर्म, संस्कृति, तीर्थों, पूजा–पद्धतियों और शिक्षा संस्थानों की सुरक्षा का अधिकार किसी भी सभ्य समाज का स्वाभाविक अधिकार है। जब ईसाई मिशनरियाँ अपने विद्यालयों और चर्चों को सरकारी हस्तक्षेप से मुक्त रखने की मांग करती हैं, या, जब मुसलमान अपने वक्फ़ बोर्ड और मदरसों के लिए विशेष प्रावधान चाहते हैं–तो वह "अल्पसंख्यकों का अधिकार" कहलाता है। परंतु यदि हिंदू समाज मंदिरों की स्वायत्तता या पाठशालाओं में वेद–गीता के अध्ययन की बात करे, तो, उसे तुरंत "सांप्रदायिक एजेंडा" कहकर खारिज कर दिया जाता है। यह दोहरी मानसिकता भारतीय संविधान की आत्मा के विपरीत है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम धर्म–स्वातंत्र्य के अर्थ को पुनः परिभाषित करें। यह अधिकार न तो केवल पूजा की स्वतंत्रता तक सीमित है, न ही केवल किसी पंथ के प्रचार का विशेषाधिकार है। धर्म–स्वातंत्र्य का अर्थ है–अपने समाज, अपनी परंपराओं, संस्कारों, प्रतीकों और संस्थाओं की रक्षा का अधिकार।

भारत का बहुसंख्यक समाज भी इस अधिकार से वंचित नहीं हो सकता। जब–जब हिंदू समाज ने अपने धर्म के लिए आवाज़ उठाई है–चाहे वह रामजन्मभूमि आंदोलन रहा हो, कांवड़ यात्रा की सुरक्षा का प्रश्न रहा हो, या, मंदिरों की सरकारी जकड़न से मुक्ति का विषय–हर बार उसे 'राजनीतिक रंग' देकर दबाने का प्रयास हुआ है। भारत का संविधान हमें किसी धर्म की श्रेष्ठता नहीं, बल्कि समानता का आदर्श देता है। और इस समानता का अर्थ यह नहीं कि बहुसंख्यक की आस्था को ही सबसे अधिक दबाया जाए। हिंदू समाज को भी अपने धर्म के पालन, प्रचार और संरक्षण का उतना ही मौलिक अधिकार है, जितना किसी अन्य को है। आज आवश्यकता है कि हिंदू समाज अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो, उन्हें संविधान के दायरे में रहते हुए दृढ़ता से अभिव्यक्त करे और उन पर अमल करे। क्योंकि धर्म–स्वातंत्र्य केवल अधिकार नहीं, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा का संकल्प है।

अपने धर्म, संस्कृति, तीर्थों, पूजा–पद्धतियों और शिक्षा संस्थानों की सुरक्षा का अधिकार किसी भी सभ्य समाज का स्वाभाविक अधिकार है। जब ईसाई मिशनरियाँ अपने विद्यालयों और चर्चों को सरकारी हस्तक्षेप से मुक्त रखने की मांग करती हैं, या, जब मुसलमान अपने वक्फ़ बोर्ड और मदरसों के लिए विशेष प्रावधान चाहते हैं–तो वह 'अल्पसंख्यकों का अधिकार' कहलाता है। परंतु यदि हिंदू समाज मंदिरों की स्वायत्तता या पाठशालाओं में वेद–गीता के अध्ययन की बात करे, तो, उसे तुरंत 'सांप्रदायिक एजेंडा' कहकर खारिज कर दिया जाता है। यह दोहरी मानसिकता भारतीय संविधान की आत्मा के विपरीत है।

हिन्दुओं के धार्मिक स्वतंत्रता समेत सभी मौलिक अधिकार सुरक्षित किए जाएँ

मुरारी शरण शुक्ल

सह सम्पादक हिन्दू विश्व

सर्वोच्च न्यायालय के माननीय मुख्य न्यायाधीश श्री बीआर गवई ने न्यायालय में खजुराहो के जावरी मन्दिर में स्थित 7 फिट ऊंची भगवान विष्णु की सिर कटी मूर्ती के पुनर्निर्माण, मरम्मत और रखरखाव का आदेश देने वाली याचिका को खारिज करने के बाद याचिकाकर्ता को संबोधित करते हुए टिप्पणी किया कि अब तो आप स्वयं भगवान से ही प्रार्थना कीजिए। आप कहते हैं कि आप भगवान विष्णु के कट्टर भक्त हैं, तो अब उन्हीं से प्रार्थना कीजिए। मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई और न्यायमूर्ति ऑगस्टिन जॉर्ज मसीह की बेंच ने यह कहते हुए सुनवाई से इंकार कर दिया कि यह विषय अदालत के अधिकार क्षेत्र में नहीं, बल्कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन आता है।

इस टिप्पणी पर व्यापक विवाद

न्यायालय में सुनवाई के समय की गई उपरोक्त टिप्पणी पर देश भर में व्यापक बहस छिड़ गई है। देशभर से प्रतिक्रियाएँ आ रही हैं। वकीलों से लेकर समाज के सभी वर्गों में इस टिप्पणी को लेकर नाराजगी है। टेलिविजन चैनलों की डिबेट से लेकर मिडिया के सभी प्लेटफार्म पर अनेक प्रकार की प्रतिक्रियाएँ देखने–सुनने को मिल रही हैं। हिन्दू समाज में इस विषय को लेकर व्यापक आक्रोश है। हिन्दू समाज के अनेक लोगों का मत है कि हिन्दू समाज की धार्मिक भावनाएँ आहत हुई हैं इस टिप्पणी से। हिन्दुओं पर की गई इस अन्यायपूर्ण टिप्पणी से हिन्दू समाज आक्रोशित है।

मुख्य न्यायाधीश की प्रतिक्रिया

माननीय मुख्य न्यायाधीश श्री बीआर गवई ने इस टिप्पणी से उपजे विवाद के आलोक में अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि वो सभी धर्मों में विश्वास रखते हैं और वो सभी धर्मों का सम्मान करते हैं। मुख्य न्यायाधीश ने यह भी कहा कि सोशल मीडिया पर चीज़ों को गलत तरीके से पेश करना चिंताजनक है। उन्होंने कहा, "हमने यह एएसआई के संदर्भ में कहा था...मैंने यह भी सुझाव दिया था कि खजुराहो में शिव मंदिर भी है, जहाँ पर सबसे बड़ा शिवलिंग है।"

विश्व हिन्दू परिषद की प्रतिक्रिया

विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष अधिवक्ता आलोक कुमार ने एक बयान जारी कर कहा है कि सीजेआई की मौखिक टिप्पणी ने हिंदू धर्म की आस्थाओं का उपहास उड़ाया है। विहिप ने अपने अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार के हवाले से एक्स पोस्ट में लिखा, "न्यायालय न्याय का मंदिर है। भारतीय समाज की न्यायालयों में श्रद्धा और विश्वास है। हम सब का कर्तव्य है कि यह विश्वास न सिर्फ़ बना रहे वरन् और मज़बूत हो। हम सब का यह कर्तव्य है कि अपनी वाणी पर संयम रखें। विशेष तौर पर न्यायालय के अंदर। यह ज़िम्मेदारी मुकदमा लड़ने वालों की है, वकीलों की है और उतनी ही न्यायाधीशों की भी है।"

"हमको लगता है कि मुख्य न्यायाधीश की मौखिक टिप्पणी ने हिंदू धर्म की आस्थाओं का उपहास उड़ाया है। अच्छा होगा अगर इस तरह की टिप्पणी करने से बचा जाए।"

सोशल मीडिया पर आक्रोश

सोशल मीडिया पर उनकी टिप्पणी को असंवेदनशील और अपमानजनक बताया जा रहा था। कुछ सोशल मीडिया यूज़र्स ने मांग की थी कि सीजेआई को सनातन हिंदू धर्म के लोगों से भगवान विष्णु का अपमान करने और उनका मज़ाक बनाने के लिए माफ़ी मांगनी चाहिए। अनेक सोशल मीडिया यूजर्स ने माननीय न्यायालय द्वारा समय–समय पर हिन्दू समाज के विरुद्ध दिए गए निर्णयों की सूचि भी जारी की और तथ्यात्मक रूप से यह कहने की कोशिश की कि सर्वोच्च न्यायालय समेत विभिन्न न्यायालय हिन्दू समाज को उनके सभी महत्वपूर्ण विषयों पर दबाने की कोशिश करते हैं।

हिन्दुओं को भी है धार्मिक स्वतंत्रता का मौलिक अधिकार

हिन्दुओं को संविधान द्वारा प्रदत धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकारों का न्यायालय के द्वारा समानता के दृष्टिकोण से सम्मान किया जाना चाहिए। हिन्दुओं के इन मौलिक अधिकारों की अनदेखी करने की कोशिश की जाती है। जैसे अन्य धर्मावलम्बियों को उनके धर्म पालन का

मौलिक अधिकार है, वैसे हिन्दुओं को भी धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार भारत के संविधान ने दिया है। और यह अधिकार सभी धर्मों के साथ समानता के आधार पर प्राप्त अधिकार है, यह हिन्दू समाज को किसी भी अन्य मजहब–रिलिजन से कमत्तर प्राप्त नहीं है।

न्यायालय दही–हांडी की ऊंचाई तय करता है, दिवाली पर पटाखे बैन करता है, जलीकट्टु पर आदेश जारी करता है, सबरीमला में महिलाओं के प्रवेश पर दखल तो देता है, लेकिन मस्जिदों में महिलाओं के प्रवेश पर परम्पराओं का हवाला देकर चुप्पी साध लेता है। मन्दिरों में बलि पर रोक लगाता है न्यायालय किन्तु बकरीद की कुर्बानी पर चुप्पी साध लेता है। मुसलमानों के आतंक के खिलाफ हिन्दुओं द्वारा दी गई टिप्पणियों का स्वतः संज्ञान लेता है न्यायालय लेकिन हिन्दुओं के खिलाफ मुसलमानों द्वारा दिए गए खतरनाक और अपमानजनक टिप्पणियों पर याचिका भी स्वीकार नहीं करता है। आतंकवादियों के पक्ष में सुनवाई के लिए आधी रात को न्यायालय खोल दिया जाता है, लेकिन हिन्दुओं के धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकारों की परवाह नहीं की जाती है, याचिका सुनने योग्य भी नहीं समझा जाता। दुर्गा पुजा पर ध्वनी प्रदुषण का हवाला देकर लाउडस्पीकर की ध्वनी 65 डेसीबल के नीचे रखने के लिए कटक के डीसीपी को निर्देश दिया जाता है (ओडिशा उच्च न्यायालय– 3 अक्टूबर 24), किन्तु मस्जिदों के लाउडस्पीकर पर टिप्पणी करने से न्यायालय परहेज करता है।

न्यायालय और न्यायिक व्यवस्था में पुरी आस्था रखने वाला हिन्दू समाज भी आपसे न्याय की उम्मीद रखते हुए आपके न्यायालय में अपनी याचिकाएँ प्रस्तुत करता है। उसको भी संविधान की आत्मा कहे जाने वाले मौलिक अधिकार (एस आर बोमई बनाम यूनियन ऑफ इंडिया– सर्वोच्च न्यायालय) संविधान द्वारा प्राप्त हैं। जब उसके मौलिक अधिकारों का कहीं भी हनन होता है, तो वह न्यायालय से ही न्याय की अपील करता है। आप से न्याय की उम्मीद हम सभी हिन्दू करते हैं और आशा भी है हिन्दू समाज को कि हमारे मौलिक अधिकार माननीय न्यायालय द्वारा सुरक्षित रखे जायेंगे।

हिन्दुओं की अनदेखी करते न्यायिक आदेश

आईए जानने का प्रयत्न करते हैं कि न्यायालय ने कब–कब हिन्दू विरोधी निर्णय दिया, या हिन्दू विरोधी टिप्पणी की।

1. **वैद्यनाथ आयुर्वेदिक कम्पनी के लोगो से शिवलिंग हटाने की याचिका खारिज** – पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय में वैद्यनाथ आयुर्वेद के लोगो के मध्य में स्थित शिवलिंग को हटाने की याचिका दी गई थी और कहा गया था कि दवाईयों पर लोगो छपा रहता है, उसके दवाइ का रैपर/डब्बा उपयोग के बाद फेंकने पर उसका अपमान हो सकता है। लेकिन याचिका खारिज हो गई।
2. **श्रीराम जन्मभूमि पर आए परिक्षा प्रश्न पर याचिका खारिज** – राजस्थान उच्च न्यायालय से याचिका में एल.एल.बी. परीक्षा के प्रश्नपत्र में अयोध्या विवाद से संबंधित एक कथित पक्षपातपूर्ण और भड़काऊ प्रश्न को हटाने की मांग की गई थी। (अनुज कुमार रावत बनाम राजस्थान राज्य) न्यायमूर्ति अनूप कुमार ढांड ने कहा कि किसी कानूनी फैसले की अकादमिक आलोचना, चाहे वह संवेदनशील मुद्दों से जुड़ा हो, जानबूझकर और दुर्भावनापूर्ण इरादे के अभाव में धर्म पर हमले के बराबर नहीं मानी जा सकती।
3. **होली छपरियों का त्योहार पर याचिका खारिज** – फराह खान सेलिब्रिटी मास्टरशेफ में जज हैं। उन्होंने होली के बारे में एक टिप्पणी की, जिसके बाद वह नेटिजन्स के निशाने पर आ गईं। फराह ने कहा कि होली सभी छपरी लोगों का पसंदीदा त्योहार है। बता दें कि "छपरी" शब्द एक जातिवादी गाली माना जाता है। फराह खान के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 196, 299, 302 और 353 के तहत एफआईआर दर्ज की गई थी। हिंदुस्तानी भाऊ के नाम से प्रसिद्ध विकास पाठक की तरफ से यह शिकायत की गई थी। मुम्बई उच्च न्यायालय ने यह याचिका खारिज करते हुए अधिक संवेदनशील न होने का सुझाव दिया।
4. **राम को काल्पनिक कहे जाने के विरुद्ध याचिका खारिज** – बनारस के एमपी–एमएलए न्यायालय ने राहुल गाँधी द्वारा श्री राम को काल्पनिक चरित्र कहे जाने के विरुद्ध दी गई याचिका को खारिज कर दिया।
5. **गायत्री माता का काल्पनिक वर्णन करने वाली पुस्तक पर प्रतिबंध की याचिका खारिज** – तथाकथित गायत्री मंत्र की वास्तविकता नामक पुस्तक में गायत्री माता को काल्पनिक कहा गया है, उसके विरुद्ध दायर की गई याचिका को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने खारिज कर दिया।
6. **उदयनीधी स्टालिन के विरुद्ध याचिका खारिज** – तमिलनाडु के मंत्री उदयनीधी ने हिन्दू धर्म के विरुद्ध अपमानजनक टिप्पणी की थी, इसके विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट ने मुकदमा सुनवाई करने से इंकार कर दिया।
7. **फिल्म आदिपुरुष के फिल्म सर्टिफिकेशन को रद्द करने की याचिका खारिज** – फिल्म आदिपुरुष के सर्टिफिकेशन को रद्द करने की याचिका सुप्रीम कोर्ट को दी गई थी, उन्होंने इसे हल्की बात कह कर खारिज कर दिया।
8. **कन्याकुमारी में घर को चर्च बनाने के विरुद्ध याचिका खारिज** – मद्रास उच्च न्यायालय की मदुरई बेंच ने आवासीय घर को चर्च में बदल देने के विरुद्ध दी गई याचिका को खारिज कर के सेकुलरिज्म का हवाला देते हुए कहा कि हिन्दुओं को सहनशील होना चाहिए।
9. **आपत्तिजनक सोशल मिडिया पोस्ट पर आई याचिका खारिज** – सोशल मिडिया के आपत्तिजनक पोस्ट पर जब याचिका आई तो बाम्बे हाई कोर्ट ने कहा कि हिन्दुओं को सेंस ऑफ ह्यूमर रखना चाहिए और सहनशील होना चाहिए।
10. **पीके फिल्म के खिलाफ याचिका खारिज** – इस याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि आपको फिल्म न पसंद हो तो न देखें और याचिका खारिज कर दी।

भगवान राम की लीला को रामायण के रूप में उकेरने वाले भगवान वाल्मीकि जी के धाम,

अमृतसर से अखण्ड ज्योति का दिल्ली आगमन

नई दिल्ली। भगवान राम–माता जानकी के पुत्र लव कुश की जन्म स्थली से आयी ज्योत का स्वागत दिल्ली में श्री खाटू श्याम दिल्ली धाम में विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष मा. आलोक जी, क्षेत्रीय संगठन मंत्री मुकेश खांडेकर जी, दिल्ली प्रात अध्यक्ष कपिल खन्ना जी एवं श्री खाटू श्याम दिल्ली धाम के राष्ट्रीय अध्यक्ष घनश्याम गुप्ता जावेरी जी द्वारा हजारों भक्तों की उपस्थिति में किया गया।

मा. आलोक जी ने बताया कि वह स्वयं अमृतसर गए, वहाँ से दिल्ली के सैकड़ों भक्त ज्योति लेकर आए हैं। श्री इंद्रजीत जी अन्य बंधु भगिनी के साथ अमृतसर से रथ में ज्योति लेकर आए हैं। पूरे नवरात्र ज्योति यहाँ स्थापित रहेगी, साथ ही अन्य मंदिरों में तथा रामलीलाओं से भी प्रार्थना की गई है कि सभी में इसी ज्योति को स्थापित किया जाए। क्षेत्रीय संगठन मंत्री मुकेश जी ने बताया कि भगवान वाल्मीकि जी द्वारा उकेरी गई रामायण में प्रभु श्री राम ने कोई चमत्कार नहीं किया, सभी कार्य मर्यादा में किए। हमें भी मर्यादा में रहते हुए सभी कार्य करने होंगे।

दिल्ली प्रांत अध्यक्ष कपिल खन्ना जी ने कहा कि भगवान वाल्मीकि जी की पावन ज्योति दिल्ली के अनेक मंदिरों में स्थापित हो रही है, इस शुभ कार्य में पूरा हिंदू समाज एकजुटता प्रदर्शित कर रहा है। श्री खाटू श्याम दिल्ली धाम के राष्ट्रीय अध्यक्ष घनश्याम गुप्ता जावेरी जी ने बताया कि जब भगवान वाल्मीकि धाम का उद्घाटन पूज्य विद्यार्थी जी महाराज ने किया, तो, उन्होंने कहा कि भगवान वाल्मीकि धाम की स्थापना अधिकांश वाल्मीकि समाज के बंधु ही करते हैं, किंतु श्री खाटू श्याम दिल्ली धाम में भगवान वाल्मीकि धाम में पूरे हिन्दू समाज ने सहयोग किया है।

विश्व हिंदू परिषद, केशवपुरम विभाग मंत्री सुमित जी ने बताया कि विश्व हिंदू परिषद, श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के साथ मिलकर सभी सनातन धर्म मंदिरों में पावन ज्योति स्थापित कर रहे है एवं शिव हनुमान मंदिर, MIG फ्लैट्स, राजौरी गार्डन, मेन नजफगढ़ रोड मंदिर से भगवान वाल्मीकि जी के स्वरूप की स्थापना का अभियान 6 अक्टूबर से प्रारंभ कर रहे हैं।

इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली प्रांत सह मंत्री अशोक जी, संघ के सामाजिक समरसता दिल्ली प्रांत संयोजक जगत जी, अमृतसर से ज्योति लेकर आए इंद्रजीत जी, नरेला जिला संघचालक मा कुलदीप जी, समरसता टोली से सोमनाथ जी, विश्व हिन्दू परिषद उत्तरी विभाग अध्यक्ष नरसिंह सहरावत जी, प्रांत सेवा प्रमुख तोताराम जी, विभाग सह मंत्री मनोज बंसल जी, पश्चिम विभाग मंत्री सरोत्तम जी सहित श्री खाटू श्याम दिल्ली धाम के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अनिल गुप्ता जी, राष्ट्रीय मंत्री डॉ. नरेश गुप्ता जी तथा श्री खाटू श्याम दिल्ली धाम से अन्य पदाधिकारी अनिल अग्रवाल जी, रविन्द्र गुप्ता जी, विपिन अग्रवाल जी एवं हजारों भक्त उपस्थित रहे।

नशा मुक्त युवा विकसित भारत की आधारशिला

राजेश कुमार

वर्तमान समय में आज भारत जिस सर्वाधिक बड़ी चुनौतियों से गुजर रहा है, उसमें से एक चुनौती है, भारत के युवक–युवतियों में बढ़ रही नशे की लत। आज ये समस्या युवाओं को सर्वाधिक प्रभावित कर रही है, जिसने न केवल समाज की जड़ों को कमजोर किया है, बल्कि नई पीढ़ी के भविष्य को भी अंधकारमय बना दिया है। युवा किसी भी देश की रीढ़ होते हैं, उनकी ऊर्जा किसी भी देश की प्रगति और विकास की दिशा तय करती है। भारत विश्व का सबसे बड़ा युवा देश है, यहाँ 65 प्रतिशत से अधिक जनसँख्या 35 वर्ष से कम है, लेकिन दुःखद यह है कि देश आज नशे की समस्याओं से जूझ रहा है। बड़े मेट्रो शहरों से होती हुई अब ये समस्या छोटे शहरों, कस्बों, ग्रामों तक में सुरसा की तरह फैल चुकी है, जो वर्तमान तथा भविष्य के भारत का एक चिंताजनक चित्र प्रस्तुत करती है।

व्यसन माने जब तन–मन–बुद्धि खराब हो रही हो, जो किसी भी समाज के लिए एक अभिशॉप है। नशा एक ऐसी समस्या है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन को खोखला कर देता है। इसका असर नशा करने वाले व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि नशे की लत का दायरा बहुत व्यापक होता है। जो परिवार, समाज और यहाँ तक कि पूरे राष्ट्र को अपनी चपेट में ले लेता है। 1980 के बाद भारत के समाज में विशेष रूप से युवाओं में तेजी से नशे की लत बढ़ने लगी, आज लगभग 20 प्रतिशत तक युवा नशे के शिकार हैं।

आज भारत में 25 से 30 करोड़ लोग एल्कोहल, ड्रग्स, कोकीन आदि–आदि नशीले पदार्थों के शिकार हैं, जिसमें लगभग 10 करोड़ युवा हैं, जो किसी भी प्रकार के नशे की गिरफ्त में हैं। ये आँकड़ा हम सबको परेशान करने वाला है। आज भारत में लगभग 10 प्रतिशत आबादी अवसाद, मनोविकार इत्यादि से जूझ रही है, जो, इसके कारण नशे के दलदल में अपने आपको धकेल दे रही है। 2019 के आँकड़ों के अनुसार भारत में लगभग 16 करोड़ लोग अल्कोहल के शिकार हैं। 3.1 करोड़ लोग भांग, चरस, गांजा के शिकार हैं, जिसमें सबसे चिंताजनक 10 से 17 वर्ष तक के लगभग 1.60 करोड़ बच्चे हैं, अब आप ही सोचिये कि जिस देश, समाज, परिवार का आने वाला भविष्य ही नशे की गिरफ्त में चला जायेगा, उसका भविष्य क्या होगा? इसका दुष्परिणाम भी समाज के साथ–साथ परिवार व्यवस्था को भी झेलना पड़ता है।

नशे की लत से उपजी समस्या केवल एक पीढ़ी तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह आगे आने वाली पीढ़ी को भी प्रभावित करती है। नशे के कारण स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता है, जिसके कारण युवाओं में धीरे–धीरे नपुंसकता की समस्या बढ़ती जा रही है और महिलाओं को गर्भ धारण करने में समस्या होती है। आज नशा घरेलू हिंसा का मुख्य कारण है, जिसके कारण पूरे परिवार को इसका कष्ट भोगना पड़ता है। नशे के कारण होने वाली घरेलू हिंसा में डबल नुकसान होता है, एक तो कोर्ट कचहरी में पैसा लगता है, दूसरा पारिवारिक ढांचा भी बिगड़ जाता है। नशा अपराध का भी मुख्य कारण बनता जा रहा है, क्योंकि नशे के कारण कोई रोजगार तो होता नहीं और पैसों की जरूरत पूरी करने के लिए इससे पीड़ित व्यक्ति अपराध की दुनियाँ में भी उतर जाता है।

नशे के कारण आज समाज में बाल अपराधों में भी वृद्धि देखी जा रही है। नशे की लत को पूर्ण करने के लिए बच्चे भी गलत कार्यों में लिप्त हो रहे हैं, जिसमें लड़कियों की भी पर्याप्त सँख्या है, जो बहुत चिंताजनक है। आजकल स्कूल, कॉलेज में पढ़ने वाले बच्चे इसका शिकार बन रहे हैं। नशे को एक स्टेट्स के रूप में देखा जाने लगा है, जिसके कारण न चाहते हुए भी युवा इस दलदल

में फंस जाने को मजबूर हैं। लेट नाईट पार्टी, रेव पार्टी आदि–आदि आज युवाओं के भविष्य को बर्बाद करने का काम कर रही हैं।

नशे के नए–नए रूप रोजाना हम सबके सामने आ रहे हैं। जो भविष्य में पढ़–लिखकर अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के किसी भी रूप में काम आ सकता था, वो बचपन में ही इसका शिकार बन जाता है, जिसके कारण परिवार के साथ–साथ देश का भी नुकसान होता है, क्योंकि हो सकता है कि इनमें से बड़ा होकर कोई–कोई अच्छा खिलाड़ी, वैज्ञानिक, सैनिक बनता। अगर आज हम देखें तो देश में प्रतिवर्ष लगभग 3,320 अरब रूपये यानी 3.32 लाख करोड़ रूपये का नशे का कारोबार होता है, जिसके कारण मध्यमवर्गीय और गरीब परिवारों का बुरा हाल है, जिस घर में कमाने वाला ही नशे की गिरफ्त में आ जाये, उस परिवार की दशा अत्यंत चिंतनीय बन जाती है। घर की आय पर उसका दुष्परिणाम स्पष्ट नजर आने लगता है। उस परिवार के बच्चों की शिक्षा पर बुरा असर पड़ता है, लगातार पारिवारिक कलह, उधारी और कर्जा में परिवार फंसता चला जाता है। उस परिवार में रोजगार का संकट पैदा हो जाता है, जो कि स्थिति को बहुत चिंताजनक बना देता है।

परिवार का मुखिया अगर इसकी गिरफ्त में है, तो सम्पूर्ण परिवार को इसका कष्ट भोगना पड़ता है। अगर हम आँकड़ों को देखें, तो WHO के आँकड़ों के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष तम्बाकू जिसमें बीड़ी, सिगरेट, गुटखा आदि–आदि के कारण 1.30 लाख वार्षिक यानि 3700 लोग रोज मरते हैं। शराब के कारण 2.6 लाख वार्षिक यानि 712 लोग रोजाना अपना दम तोड़ देते हैं। ये आँकड़ा हम सबको अंदर तक हिला देने वाला है। अगर इसी प्रकार से नशे के शिकार लोग बढ़ते रहे तो 2035 तक ये आँकड़ा 12 लाख वार्षिक तक पहुँच सकता है, जो बहुत भयावह है।

आज भारत को विकसित भारत की ओर बढ़ते हुए देखकर राष्ट्र विरोधी शक्तियाँ भी सक्रिय हैं, जिनका मानना है कि अगर भारत को महाशक्ति बनने से रोकना है, तो भारत के युवाओं को नशे

के दलदल में धकेल दो, जिसके कारण आज हम देखते हैं कि भारत में नशे का अनैतिक व्यापार भी दूसरे देशों की सीमाओं से भारत के अंदर होता है। सन 2023 में 16,100 करोड़ रूपये की अवैध ड्रग्स बरामद हुई थी और 2024 में 25,330 करोड़ रूपये की अवैध ड्रग्स बरामद हुई, जबकि हम जानते हैं कि कुल 10 से 20 प्रतिशत अवैध ड्रग्स ही जब्त हो पाती है, इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि कितनी बड़ी मात्रा में ड्रग्स भारत में युवाओं के भविष्य के साथ–साथ विकसित भारत के स्वप्न को भी अन्धकार की ओर ले जाने में सहायक होती है।

समस्या बड़ी है तो इसके विरुद्ध लड़ाई की भी हमको बड़ी तैयारी करनी होगी और एक साथ कई मोर्चों पर हमको लड़ना होगा। सबसे पहले जो इस समय हमारे भाई–बहन नशे के शिकार हैं, उनको समाज बड़ी हेय दृष्टि से देखता है, जिसके कारण वो और अवसाद में चले जाते हैं। आज सबसे बड़ी आवश्यकता ऐसे लोगों की काऊंसलिंग करने की है, अतः समाज और सरकार को ऐसे सेंटर बड़ी मात्रा में खोलने चाहिए, जहाँ उनका उचित मार्गदर्शन हो सके। स्कूल–कॉलेज के पाठ्यक्रमों में ये विषय लागू करना चाहिए, जिसके कारण आने वाली पीढ़ी इस बुराई से बच सके। समाज जागरण का काम सभी को मिलकर करना चाहिए। शादी, जन्मदिन आदि–आदि उत्सवों पर शराब के प्रचलन को बंद करना होगा और ऐसे सभी लोगों को समाज को हतोत्साहित करने की बहुत आवश्यकता है।

आज फिल्मों, वेब सीरीज में नशे को एक स्टेटस के रूप में दिखाई देने का चलन बढ़ा है, इस पर भी रोक लगाने की आवश्यकता है। युवाओं को शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करके भी युवाओं को इस लत से दूर रखने में मदद मिल सकती है। जो लोग नशे के शिकार बन गए हैं, उनको सहानुभूति की दृष्टि से देखने की जरूरत है, अतः नशा मुक्ति केंद्र, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने की आवश्यकता है। घरों के अंदर सकारात्मक और धार्मिक वातावरण बनाए रखेंगे, तो भी इस समस्या से आने वाली पीढ़ी को बचाया जा सकता है।

समय तो लगेगा, लगभग 10 साल हमको इस समस्या से लड़ने में लगाने होंगे, समाज को एक साथ नशे के विरुद्ध एक युद्ध की भूमिका में आना पड़ेगा, तो निश्चित रूप में हम अपने आने वाली पीढ़ी को, अपने परिवार को, समाज को, राष्ट्र को इस नशा रूपी समस्या से बचा पायेंगे और विकसित शक्तिशाली भारत के स्वप्न को साकार कर पाएंगे।

rajeshkumar8988@gmail.com

मृत्युंजय दीक्षित

आखिर कौन कर रहा है सांप्रदायिक तनाव भड़काने की साजिश?

उत्तर प्रदेश के कानपुर में बारावफात जुलूस के दौरान लगे, "आई लव मोहम्मद" बोर्ड से शुरू हुआ विवाद अब देशभर में फैल रहा है। उत्तर प्रदेश के उन्नाव, बरेली, लखनऊ, महराजगंज, जालौन से लेकर कैसरगंज समेत कई शहरों में मुस्लिम समाज अत्यंत उग्रता के साथ जुलूस निकाल रहा है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के बहुत ही सघन मुस्लिम बहुल इलाके में भी "आई लव मोहम्मद" लिखा बैनर टांगा गया है, जिसके कारण स्थानीय स्तर पर तनाव अनुभव किया गया। इन जुलूसों में कई जगह पुलिस से टकराव और पथराव भी हो रहा है। मुस्लिम समाज के लोग व मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति में संलिप्त रहने वाले लोग इसे मुस्लिम समाज का जेन–जी आंदोलन कहकर आग में घी डालने का कुत्सित प्रयास करते नजर आ रहे हैं, जो तनाव को और बढ़ा रहा है। सोची–समझी रणनीति के अंतर्गत इस आंदोलन में नाबालिग बच्चों को आगजनी और पुलिस पर पथराव करने के लिए आगे किया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश से शुरू हुई ये अराजकता अब उत्तराखंड के काशीपुर और तेलंगना के हैदराबाद समेत देश के कई शहरों में पहुँच गई है। आइ लव मोहम्मद के समर्थन में उत्तराखंड में पुलिस बल पर सीधा पथराव तथा हमला किया गया, हमले में महिला पुलिस कर्मी भी अभद्रता और मार पीट का शिकार हुयीं। पुलिस की गाड़ियाँ तोड़ दी गयीं। यही हाल गुजरात के गोधरा शहर में भी हुआ और महाराष्ट्र के नागपुर में भी। इन प्रदर्शनों के दौरान "सिर तन से जुदा" और लब्बैक–लब्बैक जैसे बेहद आक्रामक और आपत्तिजनक नारे लगाए जा रहे हैं।

इस पूरे विवाद की पटकथा उत्तर प्रदेश के कानपुर से शुरू हुई। कानपुर के रावतपुर में बारावफात जुलूस निकाला जा रहा था। जिस मार्ग पर जुलूस निकाला जा रहा था, उसी रास्ते पर एक जगह "आई लव मोहम्मद" का साइन बोर्ड लगा दिया गया। इसको लेकर हिंदू पक्ष ने विरोध किया और आरोप लगाया कि यहाँ नई परंपरा शुरू की जा रही है। दोनों पक्षों में तनाव बढ़ता देखकर पुलिस ने हस्तक्षेप किया और किसी प्रकार से मामला यह कहकर शांत करवाया कि नियम है कि जुलूस में किसी तरह की नई परंपरा नहीं डाली जाएगी। किन्तु बारावफात के जुलूस के दौरान कुछ लोगों ने नई परंपरा डालते हुए परंपरा वाली जगह पर ही टेंट और साइन बोर्ड फिर से लगवा दिया।

> **तमाम कट्टरपंथी और मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति करने वाले तत्व इस आग में घी डालने का प्रयास कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक वीडियो और कमेंट पोस्ट करके तनाव बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। यह सब कुछ उस समय हो रहा है, जब हिन्दू पर्वों की नवरात्रि से देवदीपावली तक एक लंबी श्रृंखाला चलने वाली है।**

पुलिस ने स्पष्ट किया कि, "आई लव मोहम्मद" को लेकर कोई भी मुकदमा दर्ज नहीं किया गया है। इस बीच संभवतः पूर्व नियोजित साजिश के अनुसार कानपुर में मुस्लिम पक्ष ने हिंदू पक्ष पर आरोप लगाया कि उसने साइन बोर्ड को फाड़ दिया था। वहीं हिंदू पक्ष ने इसका खंडन करते हुए कहा कि मुस्लिम पक्ष के जुलूस में शामिल लोगों ने हिन्दुओं के धार्मिक पोस्टर फाड़े। पुलिस के बीच–बचाव के बाद ऐसा लगा कि अब मामला शांत हो गया है। बाद में कानपुर पुलिस ने बारावफात के जुलूस के दौरान "आई लव मोहम्मद" नाम का एक नया बोर्ड बनाकर नई परंपरा शुरू करने और सांप्रदायिक सौहार्द्र बिगाड़ने के लिए मुकदमा दर्ज किया।

इस बीच पहले से तैयार बैठे एआईएमआईएम नेता और सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने सोशल मीडिया एक्स पर कानपुर पुलिस को टैग करते हुए एक पोस्ट लिखा कि "आई लव मोहमद" कहना जुर्म नहीं है, अगर है तो इसकी हर सजा मंजूर है। ओवैसी ने जिस पोस्ट को लेकर कोट किया था, उसमें दावा किया गया था कि मुस्लिम पक्ष की ओर से कथित तौर पर नई परंपरा शुरू करने को लेकर पुलिस ने मुकदमा कर दिया है। इस बात की प्रबल संभावना व्यक्त की जा रही है कि ओवैसी की इस पोस्ट के बाद सोशल मीडिया के माध्यम से अफवाहों का

बाजार गर्म होता गया और अब यह आग देश के अनेकानेक हिस्सों में फैलती जा रही है।

तमाम कट्टरपंथी और मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति करने वाले तत्व इस आग में घी डालने का प्रयास कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक वीडियो और कमेंट पोस्ट करके तनाव बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। यह सब कुछ उस समय हो रहा है, जब हिन्दू पर्वों की नवरात्रि से देवदीपावली तक एक लंबी श्रृंखला चलने वाली है।

इन सभी घटनाओं का पैटर्न लगभग एक ही जैसा नजर आ रहा है। बरेली के जखीरा मुहल्ले में "आई लव मोहम्मद" लिखे कई पोस्टर लगे थे। इंस्पेक्टर सुभाष कुमार ने बताया कि भीड़ होने की सूचना पर वे पहुँचे, तो पाया कि वहाँ इत्तेहाद–ए–मिल्लत काउंसिल के महासचिव डा. नफीस खान भी थे। पुलिस के पहुँचने पर नफीस खान ने वहाँ पर उपस्थित लोगों को घर जाने के लिए कह दिया, किंतु बाद में इंटरनेट मीडिया पर एक वीडियो प्रसारित हुआ, उसमें डॉ. नफीस कुछ लोगों से कहते सुनाई दे रहे हैं कि मैंने इंस्पेक्टर को "बहुत अपशब्द कहे। मैंने कहा कि "हाथ काट लूंगा, वर्दी उतरवा दूंगा"। जांच में पता चला है कि पुलिस के मोहल्ले से लौटने के बाद नफीस ने भीड़ को भड़काने का प्रयास किया। नफीस बरेली में मौलाना तौकीर रजा खां की पार्टी आईएमसी के महासचिव हैं।

सबसे अधिक चिंता का विषय यह है कि इन जुलूसों में 10 साल से कम आयु के लड़कों तथा औरतों द्वारा उग्र प्रदर्शन कराया जा रहा है। उन्नाव में हिंसक उपद्रव का नेतृत्व महिलाओं व बच्चों ने किया। बुर्कानशीं महिलाओं ने ही पुलिस बल पर पत्थर बरसाये और नाबालिगों ने "सर तन से जुदा" के नारे लगाकर माहौल खराब किया। कठिनाई यह है कि हमारे देश के संविधान में नाबालिगों को केवल सुधार गृह भेज दिया जाता है और महिलाओं की प्रायः जल्दी गिरफ्तारी नहीं होती। वहीं दूसरी ओर तथाकथित संविधान रक्षक मुस्लिम तुष्टिकरण का खेल प्रारंभ कर देते हैं। इन सभी उपद्रवियों को पता है कि उन्हें सभी छद्म धर्मनिरपेक्ष दलों का खुला समर्थन प्राप्त है। नाबालिगों को सोच समझ कर केवल इसलिए शामिल किया जा रहा है, क्योंकि वह आसानी से छूट जाएंगे और सजा भी बहुत कम होगी।

भारत में सार्वजनिक जगहों पर बिना अनुमति पोस्टर, बैनर लगाना गैरकानूनी है, किंतु सभी लोग इसका उल्लंघन करते हैं। पुलिस का कहना है कि यह आंदोलन गुमराह करने वाला है। मुस्लिम तुष्टिकरण में संलिप्त नेता इस आंदोलन को अल्पसँख्यकों के दमन से उपजा आक्रोश बता रहे हैं और भाजपा व हिंदू संगठनों को दोष दे रहे हैं। एक पार्टी के प्रवक्ता तो तुष्टिकरण में इतने आगे बढ़ गए कि आंदोलन सम्बन्धी एफआईआर को ही संविधान विरोधी कृत्य बताने लगे। विगत दिनों बहराइच में एआईएमआईएम के नेता द्वारा स्थानीय महाराजा सुहेलदेव राजभर का अपमान करने के कारण भी तनाव उत्पन्न हो गया था। इस प्रकार के तनाव उत्पन्न करने का प्रयास उस समय किया जा रहा है, जब योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश देश का ग्रोथ इंजन बनने की ओर अग्रसर है। योगी जी को अच्छी तरह से पता है कि उपद्रवियों व दंगाइयों से किस प्रकार निपटा जाता है? उत्तर प्रदेश की जनता को सरकार व योगी जी की रणनीति पर पर पूरा भरोसा है। यहाँ की पुलिस सतर्क भी है और कड़क भी। उत्तर प्रदेश प्रशासन इस आंदोलन की जड़ तक जाएगा और षड्यंत्रकारियों को ढूंढ निकालेगा।

ymritvsk1973@gmail.com

बहादराबाद: वात्सल्य वाटिका में मनाया गया अशोक सिंहल जी का 99वां जन्मोत्सव

बहादराबाद, हरिद्वार। संतों की नगरी माँ गंगा के पावन तट पर स्थित अशोक सिंहल सेवा धाम – वात्सल्य वाटिका में विहिप के पूर्व अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष, हिंदू समाज के प्रेरणास्रोत स्व. श्री अशोक सिंहल की 99वीं जयंती धूमधाम एवं श्रद्धाभाव से मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन नीता नैय्यर ने किया, जिन्होंने मंचासीन सभी अतिथियों का परिचय कराते हुए उनका स्वागत किया। कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा अतिथियों को शॉल और पटका भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रबंधक प्रदीप कुमार मिश्रा ने सभी मुख्य अतिथियों को स्व. अशोक सिंहल का चित्र भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर मंच पर कार्यक्रम की अध्यक्षता परम पूज्या साध्वी डॉ. मैत्री गिरी महामंडलेश्वर, जूना अखाड़ा ने की।

नीता नैय्यर ने स्व. अशोक सिंहल जी के संघर्षपूर्ण जीवन, उनके राष्ट्र निर्माण और राम मंदिर आंदोलन में निभाई गई अद्वितीय भूमिका पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता पदम सिंह ने अशोक जी की तुलना हनुमान जी से करते हुए कहा कि उन्होंने सदैव रामकाज में अपने जीवन को समर्पित रखा। उन्होंने राम मंदिर आंदोलन में निभाई गई उनकी रणनीतिक एवं प्रेरणादायी भूमिका का विस्तार से वर्णन किया। परम पूज्या साध्वी डॉ. मैत्री गिरी ने कहा कि अशोक सिंहल की प्रेरणा से हमें समाज उत्थान के लिए संगठित होकर आगे बढ़ना होगा। डॉ. अनुज सिंहल ने जन्मोत्सव के इस आयोजन के लिए प्रबंधक प्रदीप कुमार मिश्रा को बधाई देते हुए कहा कि अशोक सिंहल के आदर्श और त्याग भाव से हमें सतत प्रेरणा मिलती है। वरिष्ठ समाजसेवी एन.के.गुप्ता ने वात्सल्य वाटिका के बच्चों के लिए एक कक्ष बनवाने की घोषणा कर सबका हृदय जीत लिया। वात्सल्य वाटिका के बच्चों द्वारा प्रस्तुत दुर्गा स्तुति, सामूहिक गीत, योग और ताइक्वांडो की मनोहारी प्रस्तुतियों ने सभी आगंतुकों का मन मोह लिया। प्रबंधक प्रदीप कुमार मिश्रा ने अशोक सिंहल के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित सभी जनों को जन्मोत्सव की शुभकामनाएँ दीं। अंत में सचिव अरुण कुमार ने सभी मंचासीन अतिथियों एवं आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत के सामूहिक गान से हुआ।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

गोरखनाथ मठ और सामाजिक समरसता

डॉ. प्रवेश कुमार

गोरखनाथ मठ ने नाथ सम्प्रदाय की परंपराओं को न केवल संजोया, बल्कि उन्हें समाज की भलाई के लिए उपयोग भी किया। मठ के महंतों द्वारा श्री राम जन्मभूमि आंदोलन से लेकर शिक्षा और स्वास्थ्य आदि सेवाओं को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य किया। इसी का परिणाम है कि गोरक्ष पीठ आज भी उसी परंपरा का निर्वहन कर रहा है, शायद यही वजह है कि मंदिर के मुख्य पुजारी कमलनाथ दलित समाज से आते हैं। भारत के चिंतनधारा जिसके स्वरूप में हम एकत्व होने के भाव को देखते हैं, उसी एकत्व का प्रकटीकरण नाथ संप्रदाय ने किया है। भगवान शंकर, दत्तात्रेय से होते हुए गुरु मच्छेन्द्र नाथ तथा गोरखनाथ तक होते हुए लाखों नाथ सन्यासियों ने भारत के मौलिक चिंतन का ही प्रकटीकरण किया है। जो भारत दर्शन, सामाजिक समरसता और समता के बिन्दुओं पर आधारित है। सनातन धर्म सर्वश्रेष्ठ है, निश्चित रूप से है, क्योंकि एकमात्र यही धर्म है जो मानता है कि मनुष्य परमात्मा से अलग नहीं है। अहं ब्रह्मास्मि, शिवोऽहम् की बात सिर्फ हमारे धर्म में होती है। अर्थात् वह परमात्मा और मैं अलग नहीं हैं, मैं उसी का रूप हूँ। बंकिम चंद्र की पुस्तक आनंद मठ में संन्यासियों के द्वारा अँग्रेजी और मुस्लिम जमींदारों के द्वारा देश के बंगाल की जनता पर किए जा रहे अत्याचार और उसके विरुद्ध संन्यासियों का विद्रोह, जिसमें सत्यनाथ, जीवनाथ तमाम संत नाथ संप्रदाय से जुड़े दिखाए हैं। इसका अर्थ नाथों ने आजादी की लड़ाई में अपनी महती भूमिका का निर्वहन किया था। योगी राज गोरखनाथ ने अनेक मत–मतांतरों में विभिन्न भारतीय समाज को धार्मिक एकता के सूत्र में बाँधा। उन्होंने बौद्ध, जैन, वैष्णव शक्ति के उपासक सभी के बीच समन्वय बनाने का काम किया।

नाथ संप्रदाय अपने सामाजिक अर्थों में अत्यंत प्रगतिशील है, इसमें जातिवाद, वर्ण व्यवस्था, आडम्बर, अंधविश्वास आदि का खंडन बड़े ही तार्किक तरीके से किया गया है। नाथ संप्रदाय का उदय और उसका विकास उस कालखंड में हुआ, जिसमें हिन्दू समाज के भीतर ब्राताणिक धर्म का प्रचार था। यह ब्राताणिक धर्म मुख्यतः कर्मकाण्डीय था, जिसे पूज्य बाबा साहब अम्बेडकर जी ने भी उद्धृत किया, जिसमें उन्होंने दो प्रकार के हिन्दू बताए। एक वह जो सनातन को मानता है और सभी को समान मानते हुए मुक्ति की राह में आगे बढ़ता है। वहीं दूसरा कर्मकाण्डीय हिन्दू है। यही हिन्दू ब्राताणिक सर्वोच्चता जो ज्ञान नहीं जन्म को मान लेता है। नाथ संप्रदाय ने सनातन हिन्दू को मानते हुए मुक्ति, ईश्वर प्राप्ति सभी को सुलभ है, कोई भी ईश्वर का स्मरण कर सकता है और उसको प्राप्त कर सकता है। गुरु

गोरखनाथ मठ ने नाथ संप्रदाय की परंपराओं को न केवल संजोया, बल्कि उन्हें समाज की भलाई के लिए उपयोग भी किया। मठ के महंतों द्वारा श्री राम जन्मभूमि आंदोलन से लेकर शिक्षा और स्वास्थ्य आदि सेवाओं को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य किया। इसी का परिणाम है कि गोरक्ष पीठ आज भी उसी परंपरा का निर्वहन कर रहा है, शायद यही वजह है कि मंदिर के मुख्य पुजारी कमलनाथ दलित समाज से आते हैं।

गोरखनाथ के अनुयायियों से हठ योग की विधि का भी वर्णन हुआ, जो मूलतः क्रम अनुसार योग क्रिया के साथ जुड़ा है। इसी क्रमानुसार योग के माध्यम से ईश्वर तक कोई भी पहुँच सकता है, इसमें जाति, वर्ण का भेद नहीं है।

गोरखपुर में स्थापित गोरख मठ ने सामाजिक समरसता का अनुपम संदेश देश और दुनियाँ को दिया है। जोग अवरण जोग अभेदं, जोग अषंडित जोग अछेदं। जोग जति सति जोग दया, येहा ग्यान जति गोरश का।। यह सबदी गोरखनाथ के शब्दों में योग का सार कथन है। योग वर्णाश्रम नहीं है हठयोग, राजयोग शैव, वैष्णव, वैदिक, हिंदू, मुस्लिम, इसाई आदि विचार विभाजन नहीं है। योग मन की समग्रता है, सो योग परिशुद्ध है, जो विचार का इस्तेमाल कर सकती है। परंतु विचार अपने आप में समग्रता नहीं, योग का ग्यान जत सत सूं दया–करुणा है। गोरखनाथ जी जातिवाद सहित इसकी जड़ वर्णाश्रमवाद को सिरे से नकार देते हैं। 1932 में महंत दिग्विजय नाथ जी

पीठाधीश्वर गोरखनाथ मठ के द्वारा निर्मित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा सर्वप्रथम शिक्षा क्षेत्र में काम करते हुए समाज के वंचित, अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़े वर्गों के बच्चों को शिक्षित करने का काम किया गया। इसी के साथ वर्ष 1948 में महिला शिक्षा पर ध्यान देते हुए संस्था के द्वारा महिला कॉलेज की स्थापना की गई। इसी प्रकार से वर्ष 1959 में हमारे वन–बंधुओं की शिक्षा हेतु विद्यालय का निर्माण किया गया। गोरखनाथ मठ की स्थापना के बाद दिग्विजय जी उसके पीठाधीश्वर बने, अपनी स्थापना से ही पीठ ने गुरु गोरखनाथ जी के शब्दों का अनुसरण किया। सामाजिक समरसता को अपने व्यवहार का आधार बनाया। वैसे नाथ संप्रदाय में किसी भी प्रकार के जाति, वर्ण भेद का महत्व नहीं है।

दिग्विजय जी से लेकर योगी आदित्यनाथ जी तक सभी ने सामाजिक समरसता को लेकर बड़ी ही उत्सुकता के साथ काम किया है। मठ द्वारा आयोजित रामकथा और रंगहोली का अपना महत्व है, किसी भी तरह का भेद इसमें नहीं किया जाता है। मठ द्वारा 48 शिक्षण संस्थानों का संचालन किया जाता है, सभी में सभी का प्रवेश अपने प्रारम्भिक समय से ही है। महंत अवैद्यनाथ जी जब पीठाधीश्वर गोरखनाथ मठ हुए तब सामाजिक समरसता को लेकर मठ और अधिक सक्रियता से काम किया, ऐसा देखने को मिलता है।

एक बार कुछ धर्माचार्यों ने वक्तव्य दिया कि 'वेद की ऋचाओं का पाठ महिलाएँ एवं दलित जातीय, शूद्र जातियाँ नहीं कर सकते।' इस पर तत्काल प्रतिक्रिया देते हुए अवैद्यनाथ जी ने कहा कि 'वेद की ऋचाओं को तो उन्हीं ऋषियों द्वारा रचा गया, जो दलित जातियों से आते हैं।' समाज में दो प्रकार की शक्ति होती है। एक समाज में एकता स्थापित कर आगे बढ़ने की बात करते हैं, वहीं दूसरा धड़ा जो समाज का विभाजन करके उसे भिन्न–भिन्न रूप में देखता है। नाथ संप्रदाय ने इसी सामाजिक समरसता का कार्य किया। स्वयं अवैद्यनाथ जी ने 'दलित समाज के घर ब्रताभोज' का पूरा अभियान चलाया। सन 1981 में तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम् में करीब 150 दलितों ने इस्लाम मत स्वीकार लिया था, जिसका कारण था समाज की अगड़ी मानी जाने वाली जातियों ने उन्हें मंदिर प्रवेश नहीं करने दिया था। इस घटना ने उन्हें अंदर तक झकझोर कर रख दिया। मीनाक्षीपुरम् मंदिर में दलितों के प्रवेश पर रोक लगने के विरोध में महंत अवैद्यनाथ दक्षिण भारत पहुँच गए। वहाँ के पुजारियों और महंतों से मुलाकात कर कहा कि हिंदुओं से भेदभाव ठीक नहीं है, अगर हिन्दू मंदिर नहीं आएगा, तो संतों को कौन पूछेगा?

उन्होंने मीनाक्षीपुरम् मंदिर में तब तक धरना दिया, जब तक संतों ने यह आश्वासन नहीं दिया कि मंदिर में किसी का प्रवेश वर्जित नहीं रहेगा। सामाजिक समरसता को कायम करने गोरखनाथ मंदिर की भूमिका की चर्चा में ब्रतालीन महंत अवैद्यनाथ से जुड़े दो प्रसंग और भी काफी चर्चित हैं। पहला यह कि उनके प्रस्ताव पर ही अयोध्या के श्रीराम मंदिर के शिलान्यास की पहली ईंट एक दलित से रखवाई गई थी। दूसरा जब उन्होंने पटना रेलवे स्टेशन पर मौजूद हनुमान मंदिर में उस दलित पुजारी को फिर से स्थापित कराया था, जिसे दलित होने के नाते पदच्युत कर दिया गया था। इसी बीच महंत अवैद्यनाथ काशी पहुँचे और डोम राजा से मुलाकात की। डोम राजा ने कहा कि हम तब मानेंगे, जब संत आकर हमारे घर भोजन करेंगे। महंत अवैद्यनाथ ने कहा कि हिंदुओं में छुआछूत कहीं नहीं है, हम इसी अभियान पर निकले हैं। सब हिंदू हमारे भाई हैं, इस भाईचारे को मजबूत करना हर हिन्दू का कर्तव्य है। महंत अवैद्यनाथ जी काशी में डोम राजा के घर तमाम संतों के साथ गए और उनके यहाँ भोजन किया। उनके नेतृत्व में 21 जुलाई 1984 को अयोध्या के वाल्मीकि भवन में श्रीराम जन्मभूमि यज्ञ समिति का गठन हुआ, जिसमें अवैद्यनाथ जी को अध्यक्ष चुना गया। श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन में भी गोरखनाथ मठ की प्रमुख भूमिका रही है। महंत दिग्विजय नाथ से लेकर योगी आदित्यनाथ तक सभी ने अपनी आहुति श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में दी है। महंत दिग्विजय जी तब अयोध्या में ही थे, जब श्री रामलला जी का प्रकटीकरण जन्मभूमि स्थान पर हुआ। वहीं अवैद्यनाथ जी ने श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन को जन–जन तक पहुँचाने का काम किया। श्रीराम जन्मभूमि की आधारशिला का समारोह शुरू हुआ और महंत अवैद्यनाथ के कहने पर अनुसूचित जाति से आने वाले कामेश्वर चौपाल से आधारशिला रखवाई गई। वस्तुतः गोरक्षपीठ जाति–पाँति और ऊँच–नीच जैसे भेदभाव को नहीं मानता है। इसलिए राम मंदिर की आधारशिला रखने के लिए अनुसूचित समाज के व्यक्ति को चुना गया। गोरखपुर मठ और महंत दिग्विजय नाथ, महंत अवैद्यनाथ, वर्तमान में योगी आदित्य नाथ सभी का जीवन धर्म, सेवा और नेतृत्व का प्रतीक है।

गोरखनाथ मठ ने नाथ संप्रदाय की परंपराओं को न केवल संजोया, बल्कि उन्हें समाज की भलाई के लिए उपयोग भी किया। मठ के महंतों द्वारा श्री राम जन्मभूमि आंदोलन से लेकर शिक्षा और स्वास्थ्य आदि सेवाओं को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य किया। इसी का परिणाम है कि गोरक्ष पीठ आज भी उसी परंपरा का निर्वहन कर रहा है, शायद यही वजह है कि मंदिर के मुख्य पुजारी कमलनाथ दलित समाज से आते हैं। इसके बावजूद भी वे गोरक्ष पीठाधीश्वर हैं। इसी प्रकार से नाथ पंथ के जुड़े देवीपाटन के 'पाटेश्वरी देवी मंदिर' और महाराजगंज के चौक बाजार में 'गोरखनाथ मंदिर' में भी देखी जा सकती है। पाटेश्वरी मंदिर के महंत योगी मिथिलेश नाथ और चौक बाजार के गोरखनाथ मंदिर के पुजारी फलाहारी बाबा दोनों दलित वर्ग से ही आते हैं। जंगल धूषड़ में नाथ पीठ से संचालित बुढ़िया माता मंदिर के पुजारी संतराज निषाद हैं।

विनय कुमार गौतम ने एक दशक से भी अधिक समय से मंदिर के मीडिया प्रभारी की जिम्मेदारी संभाल रखी है। समता, सामाजिक बंधुता और सामाजिक समरसता का अनुपम उदाहरण हमें गोरखनाथ मठ गोरखपुर द्वारा स्थापित विभिन्न देवालय, विद्यालय और विश्वविद्यालयों में दिखता है।

(वीर अर्जुन से साभार)

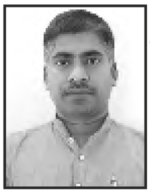

बृजनन्दन राजू

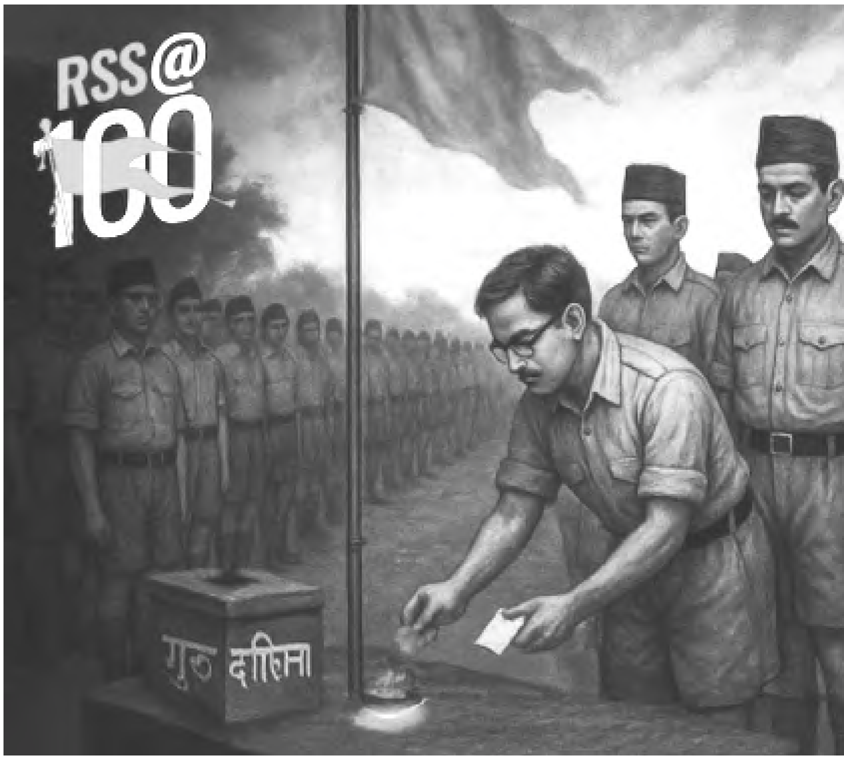

RSS @ 100
सेवा व संघर्ष के सौ वर्ष

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शताब्दी वर्ष मना रहा है। संघ की स्थापना डा. हेडगेवार ने सन 1925 में विजयादशमी के दिन नागपुर में की थी। आम जनमानस आरएसएस नाम से इस संगठन से परिचित है। आरएसएस देश का ही नहीं बल्कि दुनियाँ का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है। विश्व के 65 देशों में इस संगठन का काम है। ढ़ाई लाख से अधिक सेवा कार्यों का संचालन संघ व इससे जुड़े संगठन मिलकर करते हैं। यही नहीं देश में आने वाली हर आपदा –विपदा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक सेवा कार्य करते हुए सबसे अग्रिम पंक्ति में दिखते हैं। इसके पीछे स्वयंसेवकों का कोई स्वार्थ नहीं होता। वह निःस्वार्थ भाव से सेवा कार्य करते हैं। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार कहते थे कि हिन्दू समाज का सुख मेरा सुख और हिन्दू समाज का दुख मेरा दुख, हिन्दू समाज पर संकट मेरा संकट हिन्दू समाज का अपमान मेरा अपमान ऐसी भावना प्रत्येक हिन्दू के मन में जागृत करना ही संगठन का मूलमंत्र है। इसी भाव को मन में धारण कर जब भी देशवासियों की सेवा का अवसर आया, संघ के स्वयंसेवक कभी पीछे नहीं रहे। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार क्रान्तिकारी थे। उनके जीवन में राष्ट्रभक्ति व सेवा की भावना बचपन से ही देखने को मिलती है। क्रान्तिकारियों से सम्पर्क के उद्देश्य से वह मेडिकल की पढ़ाई के लिए कलकत्ता गए थे। क्योंकि उस समय देश में क्रान्तिकारियों का गढ़ कलकत्ता हुआ करता था। उस समय 1913 में बंगाल की दामोदर नदी में आयी भयंकर बाढ़ के समय मेडिकल के छात्र केशव हेडगेवार ने अपने साथियों को लेकर सेवा कार्य किया था। संघ स्थापना के बाद 1926 में नागपुर के पास रामकोट स्थित श्रीराम मंदिर में रामनवमी के दिन बड़ा मेला लगता है। वहाँ आने वाले हजारों श्रद्धालुओं की सब प्रकार से सेवा करने के लिए डॉ. हेडगेवार ने स्वयंसेवकों को प्रेरित किया था। वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहन राव भागवत अपने बौद्धिक वर्गों में कहते हैं कि ह्रदय की व्यथा संघ बन फूट निकली। देश की तत्कालीन परिस्थितियों की देखकर डॉ. हेडगेवार ने देशभक्ति से ओतप्रोत, अनुशासित व सेवाभावी संगठन के निर्माण की योजना को मूर्तरूप दिया। हर देश व समाज के उत्थान व पतन का कारण वहाँ के नागरिक होते हैं। इसलिए डॉ. हेडगेवार ने कहा कि हम व्यक्ति निर्माण करेंगे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्थापना काल से शाखा के माध्यम से व्यक्ति निर्माण के काम में लगा है। व्यक्ति निर्माण यानि जिसके अंदर सेवाभाव हो, त्याग व समर्पण की सिद्धता रखता हो, देश व समाज पर संकट के समय वह खड़ा हो। संघ के स्वयंसेवकों का जीवन सेवामय होता है। स्वयंसेवक समाज के कष्ट देखते ही दौड़ पड़ते हैं। केवल आपदा के समय ही नहीं तो समाज के अभाव, पीड़ा व उपेक्षा को दूर करने के लिए अपनी शक्ति व सामार्थ्य से काम करते हैं। देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें। इन पंक्तियों को ह्रदयंगम कर संघ के स्वयंसेवक हर अवसर पर अपना सर्वस्व समर्पित करने को तत्पर रहते हैं।

प्राणों की बाजी लगाकर हिन्दुओं की रक्षा – अपने जीवन को जोखिम में डालकर भी साहस और तत्परता से सेवा करने का जो संस्कार स्वयंसेवकों के मन में रोपा जाता है, उसकी कठोर परीक्षा 1947 में विभाजन से ठीक पूर्व और विभाजन के बाद हुई। विभाजन के समय सर्वाधिक संकटपूर्ण और विकराल चुनौती थी। जब समूचा पंजाब जल रहा था और काँग्रेसी नेता असहाय होकर दिल्ली में पड़े हुए थे, ऐसे समय में संकट मोल लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पंजाब के लोगों की रक्षा की। विभाजन के दौरान विनाश के काल में स्वयंसेवकों ने जो भूमिका निभाई, वह सदा सर्वदा के

लिए आत्म बलिदान, त्याग और शौर्य की गौरवपूर्ण गाथा के रूप में अमर रहेगी। मार्च 1947 में रावलपिंडी में जो मुस्लिम दंगे भड़क उठे थे, भीषण नरसंहार हो रहा था, लाखों हिंदू बेघर हो गए थे। अनगिनत हिन्दुओं की हत्या की गई। चारों ओर विवशता और नैराश्य का घोर अंधकार था। ऐसे समय में स्वयंसेवकों ने पंजाब सहायता समिति का गठन कर प्रांत की हर तहसील में शिविर खोला। उस शिविर में हिन्दुओं को आश्रय दिया। हिन्दुओं की रक्षा करते हुए उन्हें शिविर तक ले जाने में संघ के सर्वोत्तम कार्यकर्ताओं में से 87 को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। लाहौर के कुख्यात शाही किले में 120 स्वयंसेवकों को घोर अमानवीय शारीरिक यातनाएँ भी दी गईं।

आपातकाल विरोधी संघर्ष में आगे रहा संघ – आपातकाल विरोधी संघर्ष में 1 लाख से भी ज्यादा स्वयंसेवक सत्याग्रह कर जेल गये। आपातकाल के दौरान सत्याग्रह करने वाले कुल 1,30,000 सत्याग्रहियों में से एक लाख से अधिक सत्याग्रही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के थे। मीसा के अधीन जो 30,000 लोग बंदी बनाए गए, उनमें से 25000 से अधिक संघ के स्वयंसेवक थे। जबकि सत्याग्रह और जेल भरने का अनुभव का दावा करने वाली संस्था काँग्रेस 'ओ' और समाजवादी दल के ज्यादा लोग नहीं जा पाये। संघ के बाद अकाली दल की सँख्या थी लगभग 13 हजार। बाबा जयगुरूदेव भी मात्र तीन से चार हजार लोग को ही जेल भेज सके। सोशलिस्ट पार्टी के नेताओं की सँख्या बहुत सीमित थी, फिर भी अक्सर आपस में झगड़ते रहते थे। आपातकाल विरोधी संघर्ष में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 कार्यकर्ता अधिकांशतः बंदीग्रहों और कुछ बाहर आपातकाल के दौरान बलिदान भी हुए।

वनवासी क्षेत्रों की शिक्षा की ज्योति जला रहा एकल अभियान – भारत के सुदूर गाँवों और वनवासी क्षेत्रों में एकल अभियान के माध्यम से 85,551 स्कूल संचालित किये जा रहे हैं। एकल विद्यालयों के माध्यम से वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में आमूलचूल बदलाव आया है। एकल के माध्यम से भारत के 1,00,000 गाँवों और आदिवासी क्षेत्रों में 1 करोड़ से अधिक छात्रों को साक्षर किया जा चुका है। वर्तमान में एकल संस्था के 85,551 स्कूल हैं। इन विद्यालयों में 2.25 लाख बच्चे नामांकित हैं। करीब एक लाख युवाओं को कौशल का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

दिव्यांगों की सेवा में तत्पर भारत विकास परिषद – भारत विकास परिषद डेढ़ लाख परिवारों के माध्यम से अहर्निश सेवा कर रहा है। यह संगठन विशेष रूप से दिव्यांग मुक्त भारत के लिए काम कर रही है। भारत विकास परिषद की ओर से अब तक तीन लाख से अधिक दिव्यांगों को कृत्रिम अंग प्रदान किये गये हैं। परिषद सेवा व स्वास्थ्य के करीब दो हजार स्थायी प्रकल्पों का संचालन कर रही है। इन प्रकल्पों में दिव्यांग सहायता, विद्यालय, फिजियोथेरेपी सेन्टर, चल चिकित्सालय हैं। कोटा शहर में 200 बेड का अस्पताल भी भारत विकास परिषद संचालित कर रहा है।

राष्ट्रीय सेवा भारती की सराहनीय पहल – स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि 'त्याग और सेवा भारत के सर्वश्रेष्ठ आदर्श हैं।' संघ के स्वयंसेवक इसी भाव पर काम करते हैं। चक्रवात, सुनामी, बाढ़, भूकम्प, अकाल जैसी प्राकृतिक, यही नहीं समय–समय पर रेल दुर्घटनाओं, विमान हादसों सहित अन्य प्रकार के संकटों के समय में भी स्वयंसेवकों ने पीड़ितों की सभी प्रकार की सेवा करके अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। नर सेवा–नारायण सेवा के ध्येय को लेकर समाज में वंचित, अभावग्रस्त, उपेक्षित एवं पीड़ित लोगों के सर्वांगीण विकास हेतु जीवन रक्षण के लिए सेवा क्षेत्र में कार्यरत एक अखिल भारतीय स्तर का संगठन राष्ट्रीय सेवा भारती है। सेवा भारती सम्पूर्ण भारत में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सामाजिक आयामों के अन्तर्गत 44,121 सेवा कार्य संचालित कर रही है। सेवा स्वावलंबन एवं विकास का कार्य करने वाली हजारों स्वयंसेवी संस्थाओं को सेवा कार्यों के लिए समय–समय पर प्रोत्साहित कर समन्वय एवं सहयोग देने का काम सेवा भारती करती है।

बिहार में अकाल के समय 971 कुएँ खुदवाए – 1966 में बिहार के अधिकांश भागों में भयंकर अकाल पड़ा। संकट की इस घड़ी में हजारों स्वयंसेवकों ने 971 कुएँ खोदे और लगभग 21,000 अकाल पीड़ित परिवारों में भोजन और वस्त्र बांटे। 1977 में तमिलनाडु के चक्रवात के समय भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने ही सर्वप्रथम सहायता कार्य का श्रीगणेश कर 3,125 क्विंटल अनाज तथा 2,50,000 के वस्त्र और औषधियों का वितरण किया। संघ कार्यकर्ताओं ने 10 गाँव में सहायता कार्य किया और 5,773 परिवारों की सेवा की। कई गाँव में 360 नए घर बनाकर प्रभावितों को दिए गए। 1987–88 में जब गुजरात में भयंकर सूखा पड़ा, फसलें पूर्णतः चौपट हो गई थी, लाखों लोग बेकारी–अनुदान पर जी रहे थे, पशुधन भी चौपट हो गया था, प्रसिद्ध गिर वन के सिंहों के लिए भी सरकार को पेयजल की व्यवस्था करनी पड़ी, ऐसे संकट के समय स्वयंसेवकों द्वारा 1,45,310 पशुओं को रखने के लिए 123 शिविर खोले गए।

उत्तराखण्ड की त्रासदी व भूकंप के समय सेवा – 1991 में उत्तराखण्ड के

गढ़वाल क्षेत्र में उत्तरकाशी और टिहरी जिलों में भयंकर भूकंप आया। भूकंप में 768 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई तथा 20,700 घर धराशाई हो गए। इसके फलस्वरूप लाखों लोग बेघर हो गए तथा रोटी कपड़ा और भवन की मौलिक आवश्यकताओं से भी वंचित हो गए। एक करोड़ रुपए से भी अधिक के तंबू, तिरपाल, कंबल, ऊनी कपड़े और खाद्य पदार्थ सहायता सामग्री के रूप में 60 ट्रकों में भरकर अभावग्रस्त क्षेत्रों में अविलंब पहुँचाए गए। प्रथम चरण में ही 500 गाँव निश्चित कर सहायता कार्य चलाए गए। भूकंप से सर्वाधिक पीड़ित क्षेत्रों में 21 केंद्रों पर पहले 3 सप्ताह तक 60,000 से भी अधिक भूकंप पीड़ितों को खाना खिलाया गया। अपने कार्य के दूसरे चरण में समिति ने 10 जिलों के 400 घरों के पुनर्निर्माण का कार्य पूरा किया। वहीं वर्ष 2013 में केदारनाथ की भयानक त्रासदी के बाद भी सेवा भारती ने अभूतपूर्व सेवा की।

गुजरात में 400 पक्के मकान बनवाए – वहीं वर्ष 1997 में उड़ीसा राज्य में वर्षा न होने से सूखा और अकाल पड़ा। उड़ीसा के आठ जिलों के 47 प्रखण्ड सूखे से अत्यधिक प्रभावित हो गए। वनवासी कल्याण आश्रम ने निराश्रितों को चावल, बच्चों के लिए दूध और पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था की। वनवासी कल्याण आश्रम ने 3,771 गाँवों के 30,138 व्यक्तियों को कुल 11,221 क्विंटल चावल का वितरण किया। इसी तरह 2043 गाँवों में रहने वाले 1,48,074 गरीब किसानों 3580 क्विंटल प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त बच्चों को कुपोषण से बचाने के लिए 1556 गाँवों के 33,022 बच्चों को 180 क्विंटल दुग्ध का चूर्ण वितरित किया गया। पशुओं के लिए 170 गाँवों की 2,000 गायों के लिए 1,035 क्विंटल दाना–चारा की व्यवस्था की गयी। संघ के स्वयंसेवकों ने 508 गाँवों में जलाशयों के भीतर अस्थाई कुएँ खुदवाए। गुजरात में कच्छ व भुज के विनाशकारी भूकम्प को कौन भूल सकता है। यहाँ पर सेवा भारती ने 400 पक्के मकान, 23 गाँवों में स्कूल, 14 गाँवों में मंदिर, अस्पताल और सभी सुविधाओं से युक्त गाँव का पुनर्निर्माण कराया।

कोविड के संकट काल में सेवा – कोरोना संकट की घड़ी में जब संपूर्ण देश में लाक डाउन लगा और सब लोग अपने घरों में रहने को मजबूर हुए, तब संघ के हजारों स्वयंसेवक अपने जान की परवाह न करते हुए सेवा कार्य के लिए निकल पड़े। कोरोना संकट के काल में सेवा कार्य के दौरान कई स्वयंसेवकों को अपनी जान भी गंवानी पड़ी है। कोविड के दौरान देशभर में करीब 92 हजार से अधिक स्थानों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा सेवा कार्य चलाया गया। इन सेवा कार्यों में साढ़े पाँच लाख से अधिक संघ कार्यकर्ता लगे। संघ ने 73,81,802 लाख राशन किट वितरित कराया। साढ़े चार करोड़ लोगों को भोजन पैकेट वितरित किया गया। नब्बे लाख मास्क का वितरण किया और 20 लाख प्रवासी लोगों की सहायता की गई। इसके अलावा ढ़ाई लाख घुमंतू लोगों की सहायता की गई। कोरोना वायरस के प्रकोप के दौरान मातृशक्ति की भूमिका भी किसी से कम नहीं रही। संघ परिवार से जुड़ी माताओं–बहनों ने बड़ी मात्रा में मास्क बनाने का कार्य किया। देशभर में 63 लाख से अधिक मास्क संघ कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क बांटा गया। देशभर में 63 लाख से अधिक मास्क संघ कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क बांटा गया। कोरोना के मरीजों के इलाज के लिए जब रक्त की आवश्यकता पड़ी, तो, संघ के युवा कार्यकर्ताओं ने आगे आकर 60,239 यूनिट रक्तदान किया। वहीं संघ द्वारा देशभर में 7,11,46,500 परिवारों तक सीधे राशन किट पहुँचाई गई। कार्यकर्ताओं के त्याग, परिश्रम, बलिदान तथा समाज के सहयोग से संघ आज भी बढ़ता जा रहा है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)
brijnandan1188@gmail.com

विहिप केन्द्रीय अध्यक्ष की झारखंड राज्यपाल से भेंट

विश्व हिंदू परिषद, झारखंड के प्रांतीय प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय आलोक कुमार के नेतृत्व में झारखंड के महामहिम राज्यपाल श्री संतोष गंगवार से मिलकर झारखंड के हिंदू देवी, देवताओं के मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने से संबंधित ज्ञापन सौंपा। प्रतिनिधि मंडल ने राज्यपाल से आग्रह किया कि झारखंड हिंदू धार्मिक न्यास को समाप्त किया जाए, जिससे हिंदू देवी देवताओं के मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त कराया जा सके। हिंदू धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्म अपनी संस्थाएँ स्थापित करने एवं चलाने के लिए स्वतंत्र हैं, फिर हिंदू धर्म के साथ यह भेदभाव क्यों। झारखंड के हिंदू ट्रस्ट अधिनियम की धारा 70 के अनुसार सभी हिंदू मंदिरों को अपने आय का एक हिस्सा राज्य सरकार को देना अनिवार्य है, जो हिंदुओं पर जजिया कर लगाने जैसा है। हिंदू मठ मंदिरों के संचालन के लिए राजनीति से परे हिंदू धार्मिक व्यक्ति ही नियुक्त हों, जिससे मंदिरों की व्यवस्था सुचारू रूप से चल सके।

प्रतिनिधि मंडल में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार, क्षेत्र धर्माचार्य संपर्क प्रमुख वीरेंद्र विमल, प्रांत अध्यक्ष चंद्रकांत रायपत, उपाध्यक्षा श्रीमती रेखा जैन, प्रांत संगठन मंत्री श्रीमान देवी सिंह एवं प्रांत मंत्री मिथिलेश्वर मिश्र सम्मिलित थे।

व्यक्ति और राष्ट्र के विकास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा का महत्व

पंकज जगन्नाथ जयसवाल

हमने औपनिवेशिक दृष्टिकोण इसलिए अपनाया, क्योंकि स्कूलों और विश्व विद्यालयों में दी जा रही मैकाले शिक्षा राष्ट्रीय और व्यक्तिगत चरित्र दोनों के विकास के लिए अपर्याप्त है। संघ शाखा सम्पूर्ण व्यक्तित्व और चरित्र के विकास हेतु महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करती है, ताकि ऐसे युवाओं का निर्माण किया जा सके, जिनकी आकांक्षा हर राष्ट्र रखता है, क्योंकि ये जीवन कौशल और राष्ट्र निर्माण की मानसिकता हमारे शिक्षण संस्थानों में कभी नहीं सिखाई जाती।

शाखा व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र के विकास में कैसे सहायक होती है?

व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र दोनों के विकास के लिए एक मजबूत आध्यात्मिक, बौद्धिक और भावनात्मक क्षमता आवश्यक है। तभी एक ऐसा चरित्र निर्मित हो सकता है, जो अपनी ऊर्जा 'राष्ट्र प्रथम' के सिद्धांतों के अनुसार निर्देशित करे, जिससे वह समाज और देश के हित के लिए किसी भी चुनौती का सामना करने में सक्षम हो। ऐसे में एक घंटे की शाखा बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक क्षमता के आवश्यक स्तर को विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है। विभिन्न शाखा गतिविधियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक पहलू नेतृत्व गुण, चुनौतियों का आनंद लेने की क्षमता, भारत माता की सेवा पर एकनिष्ठ ध्यान, टीम वर्क, आत्मीयता और परियोजना प्रबंधन कौशल को बढ़ावा देते हैं। वे सामाजिक समभाव को भी बढ़ावा देते हैं, नियमित रूप से और प्राकृतिक आपदाओं के दौरान निःस्वार्थ सेवा गतिविधियों को प्रोत्साहित करते हैं और भारतीय मानसिकता को उपनिवेशवाद से मुक्त करते हैं।

'भारतीयत्व' का संस्कृत में शिक्षक के निर्देशों के साथ–साथ शाखा में संस्कृत के स्तोत्र और प्रार्थना से गहरा संबंध है। पहला कारण यह है कि यदि हम वास्तव में भारत के गौरव को समझने में रुचि रखते हैं, तो संस्कृत सीखने से हमें वैदिक और प्राचीन ज्ञान को समझने में मदद मिल सकती है, जो मानव जाति की वैज्ञानिक और तकनीकि प्रगति का आधार है। संस्कृत अध्ययन का दूसरा भाग हमारी स्मृति और संज्ञानात्मक क्षमताओं से संबंधित है। शोधकर्ताओं ने प्रदर्शित किया है कि प्रतिदिन संस्कृत में मंत्रों का जाप करने से स्मृति और संज्ञानात्मक कार्य में सुधार होता है। शाखा में की जाने वाली गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य विभिन्न गुणों को बढ़ावा देना है, जिनमें सहयोग, वर्तमान में रहने का महत्व, कार्यों में गतिशीलता, नेतृत्वगुण, समस्या–समाधान क्षमता, बेहतर संचार, चुनौतियों का मिलकर आनंद लेना और राष्ट्र निर्माण के लिए मिलकर काम करना शामिल है।

शाखा में बौद्धिक चर्चा या संवाद : प्रत्येक स्वयंसेवक तथ्यात्मक इतिहास, समसामयिक मुद्दों और कार्यों, राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों और समाधानों का ज्ञान प्राप्त करता है और अच्छे वक्ताओं का विकास करता है, जो विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में भाग लेते हैं, विभिन्न विषयों पर जनता को तथ्यात्मक रूप से संबोधित करते हैं और लोगों को 'राष्ट्र प्रथम' के दृष्टिकोण से कार्य करने के लिए एकजुट करते हैं। शाखा उन असँख्य सफल वक्ताओं के लिए पूर्णतः उत्तरदायी है, जैसे सभी सरसंघचालक, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, दीनदयाल जी उपाध्याय, दत्तोपंत जी ठेंगड़ी और हजारों स्वयंसेवकों जो समाज के हर वर्ग से जुड़ने की क्षमता विकसित करते हैं। शाखा ने 50 से अधिक बड़े संगठनों के संस्थापकों और कई पदाधिकारियों को तैयार किया है, जो बड़े पैमाने पर राष्ट्र की सेवा करते हैं, जिससे वे राष्ट्र के सुधार के लिए इतना बड़ा प्रयास करने में सक्षम हुए। योग और प्राणायाम शरीर और मन को मजबूत बनाने में सहायक होते हैं। मन के दृढ़ और शांत होने से पूरा दिन स्फूर्तिदायक होता है।

शाखा क्या है? यह कैसे कार्य करती है? शाखा एक व्यक्ति को कैसे आकार देती है और साथ ही समाज और राष्ट्र के विकास में भी कैसे योगदान देती है?

'शाखा' राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

(आरएसएस) की एक स्थानीय इकाई है। जहाँ नियमित गतिविधियाँ और बैठकें एक घंटे के लिए आयोजित की जाती हैं। ये शाखाएँ आरएसएस की संचालनात्मक और आधारभूत इकाइयाँ हैं और संगठन की संरचना और संचालन के लिए आवश्यक हैं। शाखा की व्यवस्था आरएसएस के जमीनी, विकेन्द्रीकृत संगठनात्मक ढांचे के लिए आवश्यक है। यह संगठन को स्थानीय स्तर पर अपनी उपस्थिति स्थापित करने और अपने राष्ट्रीय विचार और सांस्कृतिक मूल्यों के बारे में लोगों को जागरूक करने में मदद करती है।

शाखा शारीरिक और बौद्धिक प्रशिक्षण, दोनों का एक स्थल है, जो अपने स्वयंसेवकों में अनुशासन, राष्ट्रवाद और कर्तव्य की भावना को प्रोत्साहित करती है। आरएसएस का मुख्य लक्ष्य उच्च नैतिक मानकों और निःस्वार्थ सहायता की भावना वाले स्वयंसेवकों का विकास करना है। 'शाखाओं' के माध्यम से, संगठन अपने सदस्यों, जिन्हें स्वयंसेवक कहा जाता है, को नैतिक, बौद्धिक और शारीरिक शिक्षा प्रदान करता है, जो सामुदायिक सेवा, अनुशासन और देशभक्ति के गुणों का संचार करती है। संघ राष्ट्र निर्माण की प्रेरक शक्ति है। यह अपने सदस्यों और फलस्वरूप समाज में देश के प्रति प्रेम और समर्पण की गहरी भावना का संचार करना चाहता है।

कई कार्यक्रमों के माध्यम से, शाखा का उद्देश्य ऐसे नागरिकों का विकास करना है, जो राष्ट्र की एकता और कल्याण के लिए समर्पित हों। संघ का एक सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य सामाजिक समरसता और एकता को बढ़ावा देना है। हिंदू सांस्कृतिक जड़ें गहरी होने के बावजूद, यह संगठन एक बहुलवादी और समावेशी समाज को बढ़ावा देता है। विभिन्न आबादियों के बीच सद्भाव और समझ को बढ़ावा देने के लिए अंतर्धार्मिक चर्चा और सहयोग को प्रोत्साहित किया जाता है। भारत का सांस्कृतिक इतिहास कुछ ऐसा है जिसे संघ संरक्षित करने और आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। साहित्य, पारंपरिक कलाओं और त्योहारों का सम्मान करने वाली पहलों के माध्यम से, समूह का लक्ष्य सांस्कृतिक रीति–रिवाजों को पुनर्जीवित करना और बनाए रखना है, जो राष्ट्र की पहचान के लिए आवश्यक है।

लोगों और समुदायों को चुनौतियों के लिए तैयार करना संघ के लिए महत्वपूर्ण है। इसका लक्ष्य स्वयंसेवकों को संकट प्रबंधन कौशल, शारीरिक फिटनेस और आपात स्थिति के दौरान कुशलतापूर्वक प्रतिक्रिया करने की क्षमता प्रदान करना है, जो समाज के लचीलेपन के लिए संगठन के समर्पण को प्रदर्शित करता है। संघ का दर्शन और लक्ष्य एकात्म मानवदर्शन, हिंदुत्व और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विचारों में दृढ़ता से जुड़े हुए हैं। अपने विविध मिशन के माध्यम से, संघ का लक्ष्य एक मजबूत, शांतिपूर्ण और सांस्कृतिक रूप से जीवंत भारत बनाने में मदद करना है।

संघ की दैनिक 'शाखाएँ', शारीरिक अभ्यास, वार्ता और व्यायाम पर जोर देने के लिए प्रसिद्ध हैं। यह दिनचर्या अनुशासन स्थापित करके और प्रतिभागियों में जवाबदेही की भावना को प्रोत्साहित करके चरित्र विकास में मदद करती है। संघ द्वारा प्रदान की जाने वाली संरचित गतिविधियाँ समग्र व्यक्तिगत विकास चाहने वाले युवाओं के लिए एक विशिष्ट अवसर प्रदान करती हैं। आपदा सहायता उन कई सामाजिक परियोजनाओं में से एक है, जिनमें संघ सक्रिय रूप से शामिल है। युवा अक्सर समाज में महत्वपूर्ण योगदान देने की इच्छा व्यक्त करते हैं और संघ इन पहलों के लिए एक मंच प्रदान करता है। बदले में कुछ भी अपेक्षा किए बिना सेवा करने के लिए संगठन का समर्पण युवाओं के अपने स्थानीय समुदायों पर वास्तविक और रचनात्मक प्रभाव डालने के लक्ष्यों के अनुरूप है। संघ का नैतिकता और आचार –विचार को बढ़ावा देने पर जोर समाज पर इसके प्रभाव का एक और पहलू है। चरित्र विकास पर इस ध्यान का लाभकारी प्रभाव पड़ता है। यह कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों के विकास को बढ़ावा देकर व्यापक रूप से समाज को प्रभावित करता है, जो अपनी बातचीत और व्यवहार में नैतिक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। अपनी नियमित 'शाखाओं' के माध्यम से, संघ अपने सदस्यों में अपनेपन और एकजुटता की भावना विकसित करने में मदद करता है। सामाजिक, धार्मिक और भौगोलिक बाधाओं से परे, सांप्रदायिक भावना सद्भाव और समाज के प्रति दायित्व की सांझा भावना को बढ़ावा देती है। समुदाय को बढ़ावा देने पर संघ का ध्यान एक ऐसा सामाजिक ताना–बाना बनाने में मदद करता है, जो अधिक सामंजस्यपूर्ण और मजबूती से जुड़ा होता है।

संघ के अनुसार, शाखा के पीछे का विचार इस प्रकार है – 'भगवा ध्वज, एक खुले खेल के मैदान के बीच में लहराता है।' सभी उम्र के लड़के और युवा कई तरह के देशी खेल खेलते हैं। हवा में बेलगाम उत्साह होता है। सूर्य नमस्कार जैसे व्यायाम, जो योग का एक रूप है और कभी–कभी डंडे के उचित उपयोग की शिक्षा शामिल होती है। प्रत्येक गतिविधि पूरे अनुशासन के साथ आयोजित की जाती है। शारीरिक प्रशिक्षण कक्षाओं के बाद सामूहिक देशभक्ति गीत गायन होता है। राष्ट्रीय मुद्दों, घटनाओं की व्याख्या और चर्चा भी शाखा का हिस्सा होती है। जब समूह का शिक्षक एक सीटी बजाता है, तो प्रतिभागी दिन की गतिविधियों को समाप्त करने के लिए ध्वज के सामने पंक्तियों में इकट्ठा होते हैं। इसके बाद वे आदरपूर्वक प्रार्थना 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमें' का पाठ करते हैं, जिसका अर्थ है 'हे प्यारी मातृभूमि, तुम्हें मेरा प्रणाम।' शिक्षक के सभी निर्देश और प्रार्थना के श्लोक संस्कृत में हैं। प्रार्थना के अंत में प्रेरणादायक वाक्यांश 'भारत माता की जय' पूरी निष्ठा से बोला जाता है। संक्षेप में यह संघ की शाखा है। संघ के स्वयंसेवक इसमें भागीदार होते हैं। संघ की 'दैनिक शाखा' में प्रत्येक गतिविधि का एक निर्धारित समय होता है। शाखा की दैनिक दिनचर्या इस प्रकार विभाजित होती है :–

शाखा प्रारंभ, उसके बाद वार्मअप के लिए पाँच मिनट की जॉगिंग या दौड़। खेल, योग और सूर्य नमस्कार (40 मिनट)। संस्कृत श्लोक, जिन्हें अक्सर देशभक्ति गीत या सुभाषित/अमृत वचन कहा जाता है, का पाठ किया जाता है। संघ के कार्यकर्ताओं ने स्वयं हजारों गीत लिखे हैं, जो संगठन में काफी लोकप्रिय हैं। सप्ताह के हर चार से पाँच दिन कविता, गीत और संस्कृत श्लोकों का पाठ किया जाता है। सप्ताह में कम से कम दो या तीन बार, सम–सामयिक घटनाओं या वैचारिक विषयों पर चर्चाएँ होती हैं। ये गतिविधियाँ एक–दूसरे के स्थान पर हो सकती हैं और शाखा कार्यवाह, जो शाखा के प्रभारी होते हैं, यह तय करने के लिए स्वतंत्र होते हैं कि सप्ताह के किसी भी दिन कौन सी गतिविधी की जाए। (10 मिनट)। दिन की शाखा प्रार्थना के साथ समाप्त होती है। (5 मिनट) शाखा में लकड़ी की छड़ी से लड़ने का पारंपरिक कौशल, जिसे दंड युद्ध कहा जाता है, और भारतीय मार्शल आर्ट, जिसे नियुद्ध कहा जाता है, भी सिखाया जाता है। हालाँकि यह शाखा की दिनचर्या का हिस्सा नहीं है, फिर भी इनके साथ बिताया जाने वाला समय अलग–अलग होता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय चरित्र के विकास के लिए सभी अभिभावकों के लिए अपने बच्चों को शाखा में भेजना अनिवार्य है। ऐसा करने के लिए, अभिभावकों, युवाओं और वृद्ध नागरिकों को पहले अपने क्षेत्र में शाखा में शामिल होना चाहिए, ताकि वे बदलाव का अनुभव कर सकें और दूसरों को समझाने का आत्मविश्वास प्राप्त कर सकें। आरएसएस भारत में लगभग 83,000 शाखाएँ चलाता है। भारत माता की जय !!

बजरंग दल के राष्ट्रीय संयोजक नीरज दौनेरिया का हरिद्वार में युवा संवाद

फेरुपुर, हरिद्वार–25 सितम्बर। बजरंग दल के राष्ट्रीय संयोजक श्री नीरज दौनेरिया ने अपने उत्तराखण्ड प्रवास के दौरान युवाओं से संवाद करते हुए कहा कि भारत विश्व का सबसे युवा राष्ट्र है और यह युवाशक्ति ही हमारे राष्ट्र के भविष्य की दिशा तय करती है। आज विदेशी शक्तियाँ सुनियोजित षड्यंत्रों के माध्यम से हमारे हिन्दू युवाओं को नशे के जाल में फँसा कर पथभ्रष्ट करने का प्रयास कर रही हैं। अजमेर सेक्स स्कैंडल इसका ज्वलंत उदाहरण है, जहाँ नशे में फँसाकर सैकड़ों हिन्दू युवतियों का जीवन बर्बाद किया गया। अब देवभूमि उत्तराखण्ड भी इन षड्यंत्रकारियों के निशाने पर है, किन्तु बजरंग दल इसे किसी भी कीमत पर सफल नहीं होने देगा।

नीरज दौनेरिया ने कहा कि भारत हिन्दू राष्ट्र था, है और रहेगा – इसे किसी घोषणा की आवश्यकता नहीं है। हमारा लक्ष्य केवल इस राष्ट्र को पुनः अखण्ड बनाना है और यह संकल्प

अवश्य सिद्ध होगा। उत्तराखण्ड के युवाओं को नशे के जाल से मुक्त करने के लिए बजरंग दल व्यापक जनजागरण अभियान चलाएगा। कार्यक्रम में उपस्थित सभी युवाओं को यह संकल्प दिलाया गया कि वे स्वयं नशामुक्त जीवन जिएँगे और अन्य युवाओं को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। अपने उत्तराखण्ड प्रवास के दौरान श्री दौनेरिया ने प्रखंड फेरुपुर के बजरंग दल बलोपासना केंद्र का भी दौरा किया, जहाँ से तैयार हुए अनेक पहलवानों ने "बजरंग अखाड़ा" के नाम से देश–विदेश की प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर देवभूमि का नाम रोशन कर रहे हैं।

प्रांत संयोजक अनुज वालिया ने कहा कि बजरंग दल केवल एक संगठन नहीं, बल्कि हिन्दू समाज की रक्षा के लिए समर्पित एक राष्ट्रवादी आंदोलन है। युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना ही हमारा ध्येय है। प्रांत संगठन मंत्री श्री अजय कुमार ने कहा कि नशामुक्ति अभियान को गाँव–गाँव, शहर–शहर तक पहुँचाया जाएगा। बजरंग दल के प्रत्येक शक्ति केंद्र पर विशेष शिविर आयोजित कर युवाओं को जागरूक किया जाएगा और सांस्कृतिक, शारीरिक तथा मानसिक रूप से सशक्त बनाने के लिए अखाड़ों और शाखाओं को और सक्रिय किया जाएगा। बजरंग दल उत्तराखण्ड ने यह भी घोषणा की कि आने वाले महीनों में प्रदेशभर में नशामुक्ति रैलियाँ, युवाशक्ति सम्मेलन, व्यायामशालाओं का उन्नयन और नशा विरोधी जनजागरण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे।

प्रकृति की नाराजगी को नहीं समझा तो मानव अस्तित्व खतरे में

ललित गर्ग

प्रकृति अपनी उदारता में जितनी समृद्ध है, अपनी प्रतिशोधी प्रवृत्ति में उतनी ही कठोर है। जब तक मनुष्य उसके साथ तालमेल में रहता है, तब तक वह जीवन को वरदान देती है, जल, जंगल और जमीन के रूप में। लेकिन जैसे ही मनुष्य अपनी स्वार्थपूर्ण महत्वाकांक्षाओं और तथाकथित आधुनिक विकास की अंधी दौड़ में प्रकृति की उपेक्षा करने लगता है, यही प्रकृति विनाश का रूप धारण कर लेती है। आज पूरे भारत में जो बाढ़, जल प्रलय और मौसम के अनियंत्रित बदलाव के दृश्य दिखाई दे रहे हैं, वे केवल प्राकृतिक आपदा नहीं हैं, बल्कि हमारी गलतियों का सीधा परिणाम हैं। प्रकृति के इस रौद्र रूप के पीछे महज संयोग या 'कुदरत की नाराजगी' को जिम्मेदार ठहराना पर्याप्त नहीं है। यह आपदाएँ सीधे–सीधे जलवायु परिवर्तन, वनों की अंधाधुंध कटाई और अनियंत्रित विकास मॉडल का परिणाम हैं। पहाड़ों का परिस्थितिकी तंत्र अत्यंत संवेदनशील होता है, लेकिन नीति–निर्माताओं ने पहाड़ों के विकास को मैदानी मॉडल पर ढालने की कोशिश की। बड़े–बड़े होटल, अव्यवस्थित सड़कें, बांध, खनन और निर्माण ने पहाड़ों की नाजुक संरचना को हिला दिया। जब जंगल काटे जाते हैं, तो वर्षा का पानी भूमि में समाने के बजाए सीधे तेज धाराओं के रूप में बहने लगता है। यही बाढ़ और भूस्खलन का बड़ा कारण बनता है, इसी से भारी तबाही का मंजर देखने को मिल रहा है, देश के बड़े हिस्से में जन–जीवन अस्त–व्यस्त है, लाखों हेक्टेयर फसलें जनमग्न हैं, जान–माल का नुकसान भी बड़ा हुआ है, भारी आर्थिक नुकसान ने घना अंधेरा बिखेर दिया है। चारों ओर चिन्ताओं एवं परेशानियों के बादल मंडरा रहे हैं।

आज की बाढ़ और जल प्रलय केवल पानी का उफान नहीं, बल्कि हमारी गलतियों का आईना है। यह प्रकृति का प्रतिशोध है, उसकी चेतावनी है कि यदि अब भी नहीं चेते तो भविष्य और भी विकराल होगा। महात्मा गाँधी ने कहा था–"प्रकृति हर किसी की आवश्यकता पूरी कर सकती है, लेकिन किसी के लालच की नहीं," यही सच्चाई है। यदि हमने संतुलन नहीं सीखा, तो यह विनाशकारी दृश्य आने वाले वर्षों में और भयावह होंगे। लेकिन यदि हमने चेतावनी को अवसर माना, तो प्रकृति फिर से माँ की तरह हमें संभाल लेगी। जीवनदायी पानी जब अपने विकराल रूप में सामने आता है, तो उसका प्रकोप कितना घातक और विनाशकारी हो सकता है, यह इस वर्ष की मूसलाधार मानसूनी वर्षा एवं बादल फटने की घटनाओं ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है। सामान्यतः जल जीवन का आधार है, लेकिन जब वही जल अपनी मर्यादा तोड़कर प्रलयंकारी रूप में आता है तो घर, खेत, सड़क, पुल, मंदिर–मस्जिद और मानवीय जीवन तक बहा कर ले जाता है। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर और पूर्वोत्तर के पहाड़ी राज्य इस समय प्रकृति के ऐसे ही कहर का दंश झेल रहे हैं। बादल फटने की अप्रत्याशित घटनाएँ, पहाड़ों से टूटते हिमखंड, अचानक बहते मलबे और बेकाबू नदियों का सैलाब–ये सब मिलकर भयावह परिदृश्य खड़ा कर रहे हैं।

वनों की कटाई ने न केवल भूमि की जलधारण क्षमता घटाई है, बल्कि स्थानीय जलवायु चक्र को भी प्रभावित किया है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण तापमान बढ़ा है, जिससे पहाड़ी इलाकों में ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं और अप्रत्याशित समय पर अत्यधिक वर्षा हो रही है। यही कारण है कि बादल फटने जैसी घटनाएँ पहले की तुलना में कई गुना बढ़ गई हैं। पहाड़ों की बस्तियाँ, जो कभी प्राकृतिक संतुलन में जीती थीं, अब

www.vhp.org

मानवजनित गतिविधियों की मार झेल रही हैं। दरअसल समस्या का मूल यह है कि हमने विकास की परिभाषा को केवल कंक्रीट और मशीनों से जोड़ दिया है। पर्यावरणीय संतुलन और पारिस्थितिकीय संवेदनशीलता को दरकिनार कर योजनाएँ बनाई गईं। इसी का परिणाम है कि जब आपदा आती है, तो न तो हमारी चेतावनी प्रणाली पर्याप्त साबित होती है और न ही प्रशासन की तैयारियाँ। सर्वोच्च न्यायालय में हिमाचल सरकार ने यह स्वीकार भी किया है कि अब तक अपनाए गए उपाय अपर्याप्त हैं। यह स्वीकारोक्ति बताती है कि समस्या कितनी गंभीर है ?

भारत की नदियाँ कभी जीवन का स्रोत मानी जाती थीं। गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, गोदावरी जैसी नदियों के किनारे सभ्यताएँ पली–बढ़ीं। लेकिन आज वही नदियाँ मौत का पैगाम बनकर आती हैं। कारण है उनके प्राकृतिक प्रवाह में मानवीय हस्तक्षेप–बेतरतीब बांध, अतिक्रमण, नालों में बदल चुकी धारा और किनारों पर बसी बस्तियाँ। भारत में हर साल औसतन 1,600 लोग बाढ़ से मारे जाते हैं और लगभग 75 लाख लोग प्रभावित होते हैं। फसलें तबाह होती हैं, पशुधन मरता है और अरबों रुपए की आर्थिक क्षति होती है। केवल 2023 में उत्तराखंड, हिमाचल और दिल्ली में आई बाढ़ से 60,000 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हुआ। पिछले कुछ दशकों में मौसम का पैटर्न पूरी तरह बिगड़ चुका है। मानसून जो पहले जून से सितंबर तक नियमित हुआ करता था, अब अनिश्चित और असमान हो गया है। कभी 24 घंटे में महीनों की बारिश हो जाती है, तो कभी लंबे सूखे का दौर देखने को मिलता है। 2013 की केदारनाथ त्रासदी ने पहाड़ों में अंधाधुंध निर्माण की पोल खोल दी। 2023 में दिल्ली में यमुना का 45 साल का रिकॉर्ड टूटना इस बात का संकेत है कि शहर जलवायु परिवर्तन और अव्यवस्थित शहरीकरण के सामने पूरी तरह असुरक्षित हो चुके हैं।

देश के लगभग हर हिस्से में जल प्रलय की कहानियाँ देखी जा सकती हैं। उत्तराखंड और हिमाचल में पहाड़ टूट रहे हैं, भूस्खलन से गाँव उजड़ रहे हैं। बिहार और असम में बाढ़ हर साल लाखों लोगों को बेघर कर देती है। दिल्ली और मुंबई जैसे आधुनिक महानगर भी जलजमाव से पंगु हो जाते हैं। राजस्थान जैसे रेगिस्तानी राज्य में भी अनियंत्रित वर्षा और बाढ़ का नया खतरा मंडरा रहा है। सड़कों पर नावें चल रही हैं, पुल बह गए हैं, खेत–खलिहान जलमग्न हैं। यह नजारा केवल विनाश का नहीं, बल्कि हमारी नासमझी का भी प्रमाण है। प्रकृति बार–बार संकेत देती है कि संतुलन ही जीवन का आधार है, लेकिन हमने उसकी सीमाओं को लांघ दिया है। पहाड़ों को खोखला कर सुरंगें और सड़कें बनाई गईं। जंगलों को काटकर कंक्रीट के जंगल खड़े कर दिए गए। नदियों को उनके मार्ग से हटाकर कृत्रिम रास्तों में बांध दिया गया। आज जब बादल फटते हैं या नदियाँ बेकाबू होती हैं, तो यह केवल आपदा नहीं बल्कि प्रकृति का प्रतिशोध है।

अब सवाल यह है कि इस संकट से निपटें कैसे? केवल राहत और मुआवजा देना समाधान नहीं है। आवश्यकता है दीर्घकालिक और ठोस कदम उठाने की। हमें जंगल बचाने होंगे, नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को बहाल करना होगा, शहरी योजनाओं में जलनिकासी और हरियाली को महत्व देना होगा, पर्वतीय विकास में संयम लाना होगा और सबसे बढ़कर जन–जागरूकता फैलानी होगी, ताकि लोग समझ सकें कि पर्यावरण की रक्षा ही उनके जीवन की रक्षा है। जरूरत है कि आपदाओं को केवल 'प्राकृतिक' न मानकर उन्हें 'मानव निर्मित' एवं सरकार की गलत नीतियों की आपदाएँ' भी समझा जाए। इसका अर्थ है कि इनका समाधान केवल राहत और बचाव तक सीमित न रहकर दीर्घकालिक रणनीति से जुड़ा होना चाहिए। विशेषज्ञों की राय, वैज्ञानिक अध्ययन और स्थानीय समुदायों के अनुभवों को मिलाकर ऐसी नीतियाँ बनानी चाहिए, जो पहाड़ों की प्राकृतिक संरचना और परिस्थितिकी को ध्यान में रखें। प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति हमें चेतावनी दे रही है कि यदि हमने समय रहते संतुलित विकास का मार्ग नहीं चुना, तो भविष्य और अधिक भयावह होगा। पूर्व चेतावनी प्रणाली को सशक्त बनाना, पहाड़ी राज्यों के बीच आपसी समन्वय बढ़ाना, आपदा प्रबंधन तंत्र को त्वरित और प्रभावी बनाना, और सबसे बढ़कर–वनों एवं प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना, यह सब आज की सबसे बड़ी जरूरत है।

दुनियाँ की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद भारत प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली भारी जन–धन हानि को बर्दाश्त नहीं कर सकता। इस वर्ष की बाढ़ और बादल फटने की घटनाएँ केवल त्रासदी नहीं, बल्कि एक स्पष्ट संदेश है कि प्रकृति के साथ असंतुलन की कीमत हमें अपने अस्तित्व से चुकानी पड़ सकती है। इसलिए विकास की नीतियों को पर्यावरण की दृष्टि से पुनर्परिभाषित करना ही इस संकट से उबरने का वास्तविक मार्ग है।

lalitgarg11@gmail.com

आयुर्वेद के आहार-विषयक महावाक्य

गतांक से आगे....

**11. 'हिताहितोपसंयुक्तमन्नं समशनं स्मृतम्।
बहु स्तोकमकाले वा तज्ज्ञेयं विषमाशनम्।।
अजीर्णे भुज्यते यत्तु तदध्यशनमुच्यते।
त्रयमेतन्निहन्त्याशु बहून्व्याधीन्करोति वा।।'
(सु.सू.46.494)**

हितकर और अहितकर भोजन को मिलकर खाना (समशन), कभी अधिक कभी कम या कभी समय पर कभी असमय खाना (विषमाशन) या पहले खाए हुए भोजन के बिना पचे ही पुनः खाना (अध्यशन) शीघ्र ही अनेक बीमारियों को जन्म दे देते हैं। आज की स्थिति में बढ़ रही जीवन–शैली से जुड़ी बीमारियों का यही कारण है।

**12. 'प्राग्भुक्ते त्वविविक्तेऽग्नौ द्विरन्नं न समाचरेत।
पूर्वभुक्ते विदग्धेऽन्ने भुञ्जानो हन्ति पावकम्।'
(सु.सू.46.492–493)**

सुबह खाने के बाद जब तक तेज भूख न लगे तब तक दुबारा अन्न नहीं खाना चाहिए। पहले का खाया हुआ अन्न विदग्ध हो जाता है और ऐसी दशा में फिर खाने वाला इंसान अपनी पाचकाग्नि को नष्ट कर लेता है।

**13. 'भुक्त्वा राजवदासीत यावदन्नक्लमो गतः।
ततः पादशतं गत्वा वामपार्श्वेन संविशेत्।।'
(सु.सू.46.487)**

भोजन के बाद राजा की तरह सीधा तन कर बैठना चाहिये, ताकि भोजन का क्लम हो जाए। फिर सौ कदम चल कर बायें करवट लेट जाना चाहिए।

14. 'भुक्त्वाऽपि यत् प्रार्थयते भूयस्तत् स्वादु भोजनम्' (सु.सू.46.482) – जिस भोजन को खाने के बाद पुनः माँगा जाए, समझिए वह स्वादिष्ट है।

15. 'उष्णमश्नीयात्' (च.वि.1.24.1) – उष्ण आहार करना चाहिए। परन्तु ध्यान रखिए कि बहुत गर्म भोजन से मद, दाह, प्यास, बल–हानि, चक्कर आना व पित्त–विकार उत्पन्न होते हैं।

16. 'स्निग्धमश्नीयात्' (च.वि.1.24.2) – स्निग्ध भोजन करना चाहिए। परन्तु घी में डूबे हुए तरमाल के रूप में नहीं। रूखा–सूखा भोजन बल, वर्ण, आदि का नाश करता है, परन्तु बहुत स्निग्ध भोजन कफ, लार, दिल में बोझ, आलस्य व अरुचि उत्पन्न करता है।

17. 'मात्रावदश्नीयात्' (च.वि.1.24.3) – मात्रापूर्वक भोजन करना चाहिए। भोजन आवश्यकता से कम या अधिक नहीं करना चाहिए।

18. 'जीर्णेऽश्नीयात्' (च.वि.1.24.4) – पूर्व में ग्रहण किये भोजन के जीर्ण होने या पच जाने के बाद ही भोजन करना चाहिए।

19. 'वीर्याविरुद्धमश्नीयात्' (च.वि.1.24.5) – वीर्य के अनुकूल भोजन करना चाहिये। अर्थात् विरुद्ध वीर्य वाले खाद्य–पदार्थों, जैसे दूध और खट्टा अचार आदि को मिलाकर नहीं खाना चाहिए।

20. 'इष्टे देशे इष्टसर्वोपकरणं चाश्नीयात्' (च.वि.1.24.6) – मन के अनुकूल स्थान और सामग्री के साथ भोजन करना चाहिए। अभीष्ट सामग्री के साथ भोजन करने से मन अच्छा रहता है।

21. 'नातिद्रुतमश्नीयात्' (च.वि.1.24.7) – बहुत तेज गति या जल्दबाजी में भोजन नहीं करना चाहिए।

22. 'नातिविलम्बितमश्नीयात्' (च.वि.1.24.8) – अत्यंत विलम्बपूर्वक भोजन नहीं करना चाहिए।

23. 'अजल्पन्नहसन् तन्मना भुञ्जीत्' (च.वि.1.24.9) – बिना बोले बिना हँसे तन्मयतापूर्वक भोजन करना चाहिए। भोजन और तन्मयता का संबंध इतना प्रगाढ़ है कि भोजन के संबंध में आयुर्वेद में दी गई सम्पूर्ण सलाह निरर्थक जा सकती है, यदि भोजन तन्मयता के साथ न किया जाए।

24. 'आत्मानमभिसमीक्ष्य भुञ्जीत्' (च.वि.1.25) – पूर्ण रूप से स्वयं की समीक्षा कर भोजन करना चाहिये। इसका तात्पर्य यह है कि शरीर के लिये हितकारी और अहितकारी, सुखकर और दुःखकर द्रव्यों का शरीर के परिप्रेक्ष्य में गुण–धर्म का ध्यान रखते हुये यहाँ दिए गए महावाक्यों के अनुरूप ही भोजन करने का लाभ है।

25. 'अशितश्चोदकं युक्त्या भुञ्जानश्चान्तरा पिबेत्' (सु. सू.46.482) – भोजन के पश्चात युक्तिपूर्वक पानी की मात्रा लेना चाहिये। तात्पर्य यह है कि खाने के बाद गटागट लोटा भर जल नहीं चढ़ा लेना चाहिए।

स्वस्थ रहने के लिए खाद्य–पदार्थों के चयन एवं भोजन के संबंध में आयुर्वेद के इन महावाक्यों की भूमिका को स्वीकार करना और व्यवहार में लाना आवश्यक है।

जिहादी उन्माद व आक्रामकता पर लगे लगाम : विहिप'

नई दिल्ली, 27 सितंबर 2025। आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और अन्य मुस्लिम संगठनों ने वक्फ कानून में संशोधनों के विरुद्ध एक व्यापक कार्यक्रम की घोषणा की है, जिसके अंतर्गत एक दिन देश के मुसलमानों से अपनी दुकानें और संस्थानों को बंद रखने के लिए भी कहा गया है। सोशल मीडिया पर इसको भारत बंद कहा जा रहा है। इसी तरह एक अन्य दिन को मुस्लिम समाज दिल्ली और प्रांतों की राजधानियों में प्रदर्शन करके गिरफ्तारी देगा। मुस्लिम समाज दिल्ली में राष्ट्रपति भवन और राज्यों में राज भवनों की तरफ मार्च निकालेगा। इसी प्रकार सभी राज्यों में मुख्यमंत्रियों को ज्ञापन देने की बात कही गयी है।

विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार ने आज कहा कि वक्फ संशोधन कानून के विषय में सुप्रीम कोर्ट के अंतरिम आदेश का तो आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और जमीयत–उलेमा–ए–हिन्द ने स्वागत किया था। इसके बावजूद, सुप्रीम कोर्ट के अंतिम फैसले की प्रतीक्षा किये बिना आंदोलनों की घोषणा की गयी है। यह विचित्र है कि एक तरफ तो मुस्लिम संगठन न्यायालय के समक्ष इस कानून

को चुनौती दे रहे हैं और वहीं सुप्रीम कोर्ट के अंतिम फैसले की प्रतीक्षा किये बिना देश–व्यापी आंदोलन छेड़ रहे हैं।

उन्होंने कहा कि यह चिंता की बात है कि अभी बारावफात (मिलाद–उन–नबी) के कार्यक्रमों के दौरान अनेक स्थानों पर हिंसा हुई है। उसके बाद भी देश में अनेक स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों और जुलूसों में हिंसा के समाचार सामने आ रहे हैं। विश्व हिन्दू परिषद् को यह आशंका है कि वक्फ संशोधन कानून के खिलाफ आयोजित आंदोलनों में बड़ी मात्रा में हिंसा और तोड़फोड़ हो सकती है। यह देश और सामाजिक सौहार्द्र के लिए बड़ा खतरा होगा।

इस खतरे को टालने की जिम्मेदारी, सबसे अधिक तो इस आंदोलन का आयोजन करने वाले लोगों की होगी। यह उनकी जिम्मेदारी है कि कार्यक्रम शांतिपूर्ण हों और इनमें सरकारी और अन्य सम्पतियों पर तोड़फोड़, दंगा और मारपीट न हो।

विहिप अध्यक्ष ने यह भी कहा कि केंद्र और राज्य की सरकारों को भी सब प्रकार की स्थिति से निपटने की पूर्व तैयारी करना आवश्यक है। इन कार्यक्रमों के आयोजन, फैलाई जा रही उत्तेजना, कानून व्यवस्था और सामाजिक संबंधों को चुनौती देने वाले सोशल मीडिया अभियानों पर नजर रखकर कानून और व्यवस्था बनाये रखने और सब प्रकार की परिस्थिति से निपटने के लिए हर संभव प्रयत्न किया जाना आवश्यक है। हम समाज का भी आह्वान करते हैं कि वह घृणा और उन्माद के इस अभियान को देखते हुए आत्मरक्षा के लिए सतर्क रहे और इसके लिए सभी आवश्यक कदम उठाए।

vinodbansal01@gmail.com
vigyananand.ico@gmail.com

'बजरंग दल का शस्त्र पूजन कार्यक्रम संपन्न'

गंज बासौदा में नवरात्रि के छठवें दिन बालाजी नगर स्थित विश्व हिन्दू परिषद जिला कार्यालय अशोक भवन में बजरंग दल के तत्वावधान में शस्त्र पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान राम के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्जवलन एवं शस्त्रों का पूजन कर किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विभाग सह मंत्री संदीप नेमा ने कहा कि भारतीय संस्कृति में शस्त्रों का बहुत बड़ा महत्व है, तभी तो जब भगवान राम को वनवास हुआ, तो उन्होंने अपने राजसी वस्त्र, पदवेश सब कुछ त्याग दिया, परंतु साथ लेकर यदि कुछ गये, तो धनुष बाण तथा अयोध्या की मिट्टी। इसी धनुष बाण से उन्होंने वनवास काल के दौरान दैत्यों का संहार किया था। हम यदि अपने देवी–देवताओं को भी देखें, तो सभी के हाथ में कोई न कोई शस्त्र अवश्य है। समरसता प्रांत टोली सदस्य चंद्रशेखर शर्मा ने कहा कि शस्त्र पूजन का यह पर्व हमें अपनों घरों में शस्त्र रखने की प्रेरणा देता है।

मातृशक्ति की विभाग संयोजिका ज्योति वर्मा ने कहा कि महिलाओं को भी शक्ति की आराधना के इस पर्व पर सामर्थ्यवान बनने का संकल्प लेना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन जिला मंत्री अभिषेक शर्मा गुरूजी ने किया एवं आभार जिलाध्यक्ष मुकेश सेन ने व्यक्त किया। इस अवसर पर विभाग विशेष संपर्क प्रमुख नितिन सक्सेना, प्रांत सोशल मीडिया प्रमुख सत्यम दुबे बवली, जिला कोषाध्यक्ष हरिशंकर झा, जिला कार्यालय प्रमुख केशव सिंह हाड़ा, मातृशक्ति जिला संयोजिका स्वदेश छाबड़ा, बजरंग दल नगर संयोजक भजन प्रजापति सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

विश्व हिन्दू परिषद-धर्मप्रसार विभाग

अखिल भारतीय बैठक-12 से 14 सितम्बर-2025 प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

बैठक के महत्वपूर्ण बिंदु

दिनांक 12, 13 और 14 सितम्बर 2025 को श्री शंकराचार्य आश्रम, प्रयागराज में धर्मप्रसार की अखिल भारतीय बैठक आयोजित हुई। बैठक में कुल अपेक्षित कार्यकर्ता 152 थे, उनमें से 123 उपस्थित रहे। बैठक में सभी केंद्रीय कार्यकर्ता और क्षेत्र प्रमुख उपस्थित थे। उत्तर आन्ध्र, हिमाचल, जम्मू–कश्मीर, पंजाब, महाकौशल और दक्षिण बिहार को छोड़कर सभी प्रान्तों के कार्यकर्ता उपस्थित थे। बैठक में हुए विभिन्न सत्रों में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा हुई और निर्णय लिए गए।

परियोजना – देश में चल रही विभिन्न परियोजनाओं और जातियों में चल रहे काम के बारे में कार्यकर्ताओं ने जानकारी दी और यह तय किया गया कि सभी प्रान्तों में कम से कम एक जाति को चुनकर उनमें परियोजना प्रारंभ करने का प्रयत्न करना चाहिए और साथ–साथ अध्ययन प्रकोष्ठ प्रारंभ करना चाहिए।

समर्पण कार्यक्रम – माननीय मोहन जोशी की पूण्य स्मृति में 07 से 11 नवंबर तक समर्पण कार्यक्रम होगा। इस कार्यक्रम को प्रभावी व सफल बनाने के लिए अभी से हम सभी को प्रयत्न करना चाहिए, सभी कार्यकर्ताओं को अपने मोबाइल में संबंधित कार्यकर्ताओं के फोन नंबर एकत्रित कर लेने चाहिए, जैसे सभी क्षेत्र प्रमुखों के मोबाइल में उनके प्रान्तों की प्रांत टोलियों के सभी सदस्यों के नंबर फीड होने चाहिए, सभी प्रांत प्रमुखों के मोबाइल में सभी जिला टोलियों के कार्यकर्ताओं के नंबर फीड होने चाहिए, सभी जिला प्रमुखों के मोबाइल में उनकी जिला टोली और प्रखंड टोलियों के सदस्यों के नंबर फीड होने चाहिए, सभी प्रखंड प्रमुखों के मोबाइल में सभी ग्राम टोलियों और सत्संग के सदस्यों के नंबर फीड होने चाहिए, साथ ही उनका ब्रॉडकास्ट लिस्ट और व्हाट्सएप ग्रुप बना लेना चाहिए। सभी धर्मरक्षक और पूर्णकालिक समर्पण कार्यक्रम में भी लगना चाहिए।

संत प्रवास – दशहरे से दीपावली के बीच के (3 से 20 अक्टूबर) के समय में करना चाहिए। इसके लिए प्रवास करने वाले संतों की सूची, उनके साथ जाने वाले कार्यकर्ताओं की सूची, वितरण सामग्री एकत्रित करना, गाँव का चयन करना और कब किस गाँव में जाएंगे यह दिनांक अभी से तय कर लेनी चाहिए।

अयोध्या ध्वजा रोहण कार्यक्रम – 25 नवंबर को अयोध्या में ध्वजारोहण के कार्यक्रम में जाने वाले जनजाति और अनुसूचित जाति के संतों की सूची नाम और फोन नंबर सहित शीघ्र केंद्रीय कार्यालय को भेजनी है।

धर्मरक्षक वर्ग – जिन क्षेत्रों में धर्म रक्षकों की नियुक्तियाँ पर्याप्त नहीं हैं उनका क्षेत्रीय वर्ग लगाकर धर्म रक्षकों की नियुक्तियाँ करनी चाहिए। सभी चयनित प्रखंडों में धर्म रक्षक हो जाए, इसकी चिंता करनी है।

कार्य विस्तार योजना – जिन प्रान्तों में कार्य विस्तार योजना ठीक प्रकार से नहीं हुई और जो कार्यकर्ता अभी 3 दिन के प्रवास पर नहीं गए, जिला स्तर के, प्रखंड स्तर तक के सभी कार्यकर्ताओं का प्रवास इस योजना के अंतर्गत होना ही चाहिए।

संगठन संरचना – प्रांत टोली, चयनित जिला टोली और चयनित प्रखण्डों की टोलियों को पूर्ण करना और इन सभी कार्यकताओं का नाम, पिन कोड सहित पता और मोबाइल नम्बर केन्द्र को भेजना।

अ.भा निधि प्रमुख और ट्रस्टियों की बैठक – आगामी 4, 5 अक्टूबर को अजमेर में होने वाली निधि प्रमुखों और ट्रस्टीयों की बैठक में अपेक्षित कार्यकर्ताओं का आरक्षण करवाकर उन सभी की सूची केन्द्र को शीघ्र भिजवायें।

वार्षिक योजना – इस योजना के अनुसार प्रांत बैठकें, समन्वय बैठक, प्रशिक्षण वर्ग तथा त्रैमासिक प्रखंड बैठक समय पर हो। इसका तिथि निर्धारित करते हुये केन्द्र को अवगत कराना।

परावर्तन के बाद – धर्मजागरण समन्वय के अखिल भारतीय प्रमुख श्री शरद जी ढोले ने एक सत्र में परावर्तन के बाद क्या–क्या कार्य करने चाहिये, उसकी विस्तृत जानकारी देते हुये कहा कि परावर्तित परिवारों को टिकाये रखने के लिए उनसे निरंतर संपर्क बना रहे, इसके लिए उनके बीच धार्मिक, सांस्कृतिक और सेवा के कार्यो की योजना बनानी चाहिए, कम से कम उन्हें एक पीढ़ी तक संभाल कर रखने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि क्रिप्टो क्रिश्चियन की घरवापसी होती है, तो उसके लिए कोई सरकारी औपचारिकताएँ पूर्ण करने की आवश्यकता नहीं है, केवल गजेटेड क्रिश्चियन की घरवापसी के समय ऐसा होगा। आगे उन्होंने कहा कि धर्मान्तरण का मुख्य कारण धर्म के प्रति निष्ठा और दृढ़ता का अभाव है, इसलिए सभी क्षेत्रों में हिंदुओं के बीच धार्मिक कार्यक्रम व सत्संग का अधिक से अधिक प्रसार करना चाहिए।

समन्वित प्रयास – दूसरे सत्र में श्री शरद जी ढोले ने समन्वय के बारे में हम सबको समझाते हुये कहा कि जहाँ विश्व हिंदू परिषद के धर्मरक्षक कार्यरत हैं, वहाँ धर्म जागरण व श्रद्धा जागरण कार्य नहीं करेगा। विभिन्न स्तरों पर समन्वय की बैठक आयोजित होती है, उसमें कार्यकर्ताओं को जाना चाहिए।

प्रतिभा विकास केंद्र – माननीय श्री वीरेंद्र जी और श्री मयंक जी ने वनवासी रक्षा परिवार और प्रतिभा विकास केंद्र के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

सत्संग – माननीय श्री बसंत जी रथ ने देश भर में चल रहे धर्मप्रसार के सत्संगों की जानकारी ली और सत्संग विस्तार के लिए सभी को प्रेरित किया और अक्टूबर 26 से नवम्बर 02 तक एक सप्ताह व्यापी सत्संग दर्शन कार्य करने के लिए सभी को प्रेरणा दी।

वार्षिक बैठक – भारतीय जनसेवा संस्थान की वार्षिक साधारण सभा की बैठक का भी आयोजन किया गया, उसमें सभी संवैधानिक औपचारिकताएँ पूर्ण की गई तथा नए चुनाव किए गए। चुनाव में माननीय श्री मनोहर दास गुजराती जी को अध्यक्ष और श्री सुधांशु जी पटनायक को महामंत्री पुनः चयन किया गया। महामंत्री ने अपनी नयी कार्यकारिणी घोषित की।

समापन – माननीय मिलिंद जी परांडे ने कहा कि शीघ्र ही सभी चयनित प्रखंडों में धर्मरक्षकों की नियुक्ति हो जानी चाहिए, साथ ही सभी कार्यकर्ताओं को आत्मावलोकन कर अपने आप को धर्मप्रसार के कार्य के लिए तैयार करना चाहिए। आवश्यकता हो तो अपने स्वभाव और कार्य पद्धति में आवश्यक परिवर्तन करे, उन्होंने संघ द्वारा चलाए जा रहे पंचपरिवर्तनों की संपूर्ण जानकारी दी तथा विमर्श का विषय ठीक प्रकार से प्रसारित करने के लिए सभी प्रान्तों में विभिन्न व्हाट्सएप ग्रुप बनाने के निर्देश दिये साथ ही सभी प्रान्तों में अध्ययन गट, (एकेडमी टोली) शीघ्र बन जाए, इस पर जोर दिया।

अखिल भारतीय प्रमुख श्री सुधांशु जी पटनायक ने व्यवस्था में लगने वाले सभी कार्यकर्ताओं को कृतज्ञता पूर्वक धन्यवाद दिया और बैठक में आने वाले सभी कार्यकर्ता बन्धुओं का भी आभार प्रकट किया। तत्पश्चात शांति पाठ और जय घोष के बाद बैठक का समापन हुआ।

jansewa@gmail.com

विहिप द्वारा आयोजित सामाजिक समरसता संगोष्ठी

सुल्तानपुर, 19 सितंबर। विश्व हिन्दू परिषद कुशभवनपुर (सुलतानपुर) जिले में सामाजिक समरसता संगोष्ठी का आयोजन किया गया, कार्यक्रम के मुख्य वक्ता केंद्रीय सह संगठन महामंत्री श्रीमान विनायक राव जी रहे। अध्यक्षता सुदर्शन हेला समाज के अध्यक्ष श्रीमान चुन्नीलाल सुदर्शन जी ने किया।

सामाजिक समरसता संगोष्ठी सरस्वती शिशु मंदिर में सम्पन्न हुई, जिसमें जिले के सभी धार्मिक और सामाजिक बुद्धिजीवियों और कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। संगोष्ठी का उददेश्य भारतीय समाज में सामाजिक समरसता और एकता को बढावा देना था, जहाँ विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक समूहों को एक मंच पर लाकर परस्पर सहयोग की भावना को मजबूत किया गया।

संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय सह संगठन महामंत्री विश्व हिन्दू परिषद विनायक राव देशपाण्डे जी के मार्गदर्शन में प्रमुख विषयों पर चर्चा की गई, जिनमें सामाजिक समानता, धर्मनिरपेक्षता, जातिवाद और धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा शामिल थे। श्री विनायक जी ने कहा कि हम सब हिन्दू हैं। हमारी पूजा–पद्धतियाँ, आचार विचार, भोजन–वस्त्र भले भिन्न हों, पर हमारी आत्मा एक है। यह एकात्मता ही हमारी पहचान है। कुछ सदियों की गुलामी, आक्रमणों और कृत्रिम विभाजनों ने हमें बांट दिया। अब समय आ गया है कि हम उन विघटनकारी शक्तियों को पहचानें और समाज को फिर से एक करें।

संगोष्ठी में विहिप से प्रांत संगठन मंत्री श्री नितिन जी, प्रांत समरसता प्रमुख भूपेन्द्र जी, नागेन्द्र सिंह, निशा सिंह, दिवाकर सिंह रघुवंशी, संतोष पाण्डे, सच्चिदानंद माधव जी, सोहन लाल, संजय तिवारी, रमेश जी, राजेश्वर, सुशील त्रिपाठी, डॉ. अनुपम पाण्डे, संत गण, शिक्षाविद् और युवा उपस्थित थे।

यूरोप में हिन्दू सम्मेलन

नार्वे में द्वितीय राष्ट्रीय हिन्दू सम्मेलन आयोजित

यूनाईटेड हिन्दू स्ट्रांगर हिन्दू थीम के साथ 23 अगस्त 2025 को पूर्ण दिवस का हिन्दू सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें 200 से अधिक हिन्दुओं ने भाग लिया। सम्मेलन में राजनीति, व्यापार, शिक्षा जगत एवं अन्य व्यवसायिक क्षेत्रों से जुड़े हिन्दुओं ने सहभाग किया।

अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के बाद स्वागत भाषण विहिप नार्वे के मनोज मिश्र ने दिया। ओस्लो में भारतीय दूतावास के एचई गौतम भट्टाचार्य के साथ ओस्लो के मेयर एनी लिम्बडो, स्वेडिश एम्बासडर टू कतर एरिक सोल्हेम एवं स्वामी विज्ञानानंद जी महाराज ने मंच को सुशोभित किया। सम्मेलन के विषय बिन्दु पहचान, सामाजिक योगदान एवं सहकार पर केन्द्रित था। अर्थशास्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं संस्कृति पर भी वक्तव्य हुए। सम्मेलन में हिन्दू समाज की शांतिप्रियता, सहयोग की भावना एवं नार्वे के लोगों के साथ समाज में सहजीविता पर जोर दिया गया। समाज में विविधता, एकता और पारस्परिक सम्मान के भाव पर भी जोर दिया गया। सम्मेलन में कुल छः सत्र आयोजित हुए।

विहिप का जर्मनी राष्ट्रीय सम्मेलन

30–31 अगस्त 2025 को ड्यूस्च हिन्दू कांफ्रेस, फ्रैंकफर्ट के नाम से विहिप जर्मनी का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। विहिप के जर्मनी में 33 वर्षों के इतिहास में पहली बार 400 से अधिक हिन्दुओं का एक विराट सम्मेलन आयोजित किया गया। युनाइटेड कम्यूनिटिज स्ट्रांगर जर्मनी के थीम पर आयोजित इस दो दिवसीय सम्मेलन में जर्मनी में जन्में हिन्दुओं के साथ–साथ, जर्मनी, भारत, श्रीलंका, अफगानिस्तान, नेपाल एवं बाँग्लादेश की पृष्टभूमि के हिन्दू एवं वैचारिक परिवर्तन से बने हिन्दू भी सम्मिलित हुए।

सम्मेलन का उद्घाटन विहिप जर्मनी के अध्यक्ष श्री रमेश जैन के भाषण से हुआ। तत्पश्चात सीडीयू हेसेन के महामंत्री लियोपोल्ड बार्न ने कहा कि जर्मनी के राजनीतिक दल भारतीय प्रवासियों के साथ अधिक इंगेजमेंट के लिए तैयार हैं और भारतीयों के समाज में योगदान का महत्व स्वीकार करते हैं। पार्टिक्स एनवी के डॉ. गुन्जन भारद्वाज, पैट्रिजिया इमोबिलिन के सीईओ डॉ. अशोक वोहरमैन ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया। विहिप के अंतरराष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री स्वामी विज्ञानानंद ने कहा कि जर्मनी के सभी हिन्दू संगठन और मंदिर एसोसिएशन को नवनिर्मित होता फोरम में साथ आने की आवश्यकता है। वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए, सामुदायिक हितों की रक्षा के लिए और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पटल पर सबल प्रतिनिधित्व के लिए संगठित हिन्दू वॉयस अति आवश्यक है। उन्होंने हिन्दू समाज से अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों के प्रति सांस्कृतिक समन्वय, शैक्षणिक मार्गदर्शन एवं भावात्मक सहयोग का आवाहन किया।

फ्रांस में विहिप सम्मेलन

विहिप के अंतरराष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री स्वामी विज्ञानन्द जी ने फ्रांस में विहिप सम्मेलन को सम्बोधित किया। 1 सितम्बर का पेरिस में आयोजित इस सम्मेलन में 200 से अधिक विहिप कार्यकर्ता सम्मिलित हुए, जिसमें स्वामी जी ने धर्म एवं अर्थशास्त्र के विषय पर अपना वक्तव्य दिया। उस दिन कार्यदिवस था और वर्षा भी हो रही थी, फिर भी बड़ी सँख्या में कार्यकर्ता उपस्थित हुए और स्वामी जी को सुनकर सभी बहुत उत्साहित थे और विहिप का कार्य लगातार करने का संकल्प ले रहे थे। सम्मेलन रात्रिभोज के साथ पूर्ण हुआ। सम्मेलन के पूर्व स्वामी जी इस्कॉन मंदिर गए, मंदिर के अध्यक्ष से मिले और चर्चा की। 2 सितम्बर को स्वामी जी बीएपीएस स्वामीनारायण सम्प्रदाय के निर्माणाधीन मन्दिर को देखने गए। हिन्दू समाज के महत्वपूर्ण लोगों से मिले। दोपहर में विहिप कार्यकर्ताओं के साथ बैठे, उन्हें हिन्दू एकता एवं विहिप के संगठन विस्तार पर मार्गदर्शन दिया। विभिन्न व्यवसायिक, साँस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों के लोगों को जोड़ने का भी सुझाव दिया। स्वामीनारायण समुदाय द्वारा आयोजित गणेश चतुर्थी के आयोजन को भी सम्बोधित किया स्वामी जी ने।

हिंदू काउंसिल ऑफ न्यूजीलैंड, उच्चायोग के इंडिया ऑडिटोरियम,
वेलिंग्टन में हिंदू महिला मंच द्वारा प्रथम हिन्दू महिला सम्मेलन आयोजित किया गया।

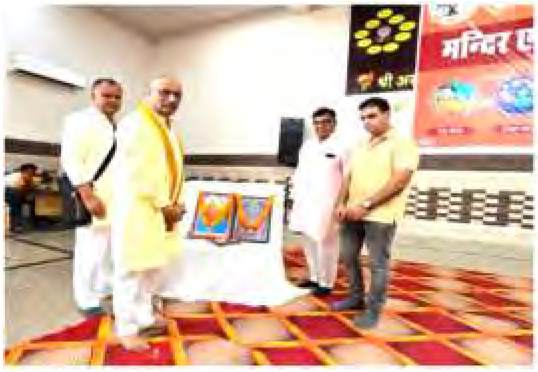

जोधपुर (राजस्थान)। श्री गंगानगर, हनुमानगढ़ और सूरतगढ़ जिले में मठ-मंदिर-अर्चक पुरोहित आयाम द्वारा मन्दिर न्यासी -पुजारी तथा पुरोहित बंधुओं के जिला सम्मेलन में उपर्युक्त तीनों जिलों के सभी 27 प्रखंडों से 1100 बंधु/भगिनी सम्मिलित हुए।

बहादराबाद, हरिद्वार स्थित वात्सल्य वाटिका में मनाया गया अशोक सिंहल जी का 99वां जन्मोत्सव

गंजबासौदा के बालाजी नगर स्थित विहिप जिला कार्यालय अशोक भवन में बजरंग दल द्वारा शस्त्र पूजन का आयोजन किया गया

अशोकनगर के स्थानीय रामलीला मंच सुभाषगंज में विहिप,
मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी एवं बजरंग दल द्वारा शस्त्र पूजन कार्यक्रम आयोजित किया गया

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 13.10.2025
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

राजस्थान सरकार

बरषत हरषत लोग सब, करषत लखै न कोइ।
तुलसी प्रजा सुभाग ते, भूप भानु सो होइ ।।

इस साल की दीपावली
हर घर खुशहाली

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य सेवाएं एवं वाहन समेत
अनेक वस्तुएं हुई सस्ती

दैनिक उपयोग की वस्तुएं

वस्तु	पहले	अब
हेयर ऑयल, शैम्पू, साबुन, टूथपेस्ट	18 %	5 %
मक्खन, घी, चीज, नमकीन, भुजिया	12 %	5 %
बर्तन	12 %	5%
बच्चों की बोतलें व डायपर	12 %	5%
सिलाई मशीन	12 %	5%

शिक्षा

वस्तु	पहले	अब
मैप्स, चार्ट, ग्लोब	12 %	Nil
पेंसिल, शार्पनर	12 %	Nil
कॉपी व नोटबुक	12 %	Nil
रबर (Eraser)	5%	Nil
क्रेयॉन्स	12 %	Nil

हेल्थकेयर

वस्तु	पहले	अब
हेल्थ व लाइफ इंश्योरेंस	18 %	Nil
36 जीवन रक्षक दवा	12 %	Nil
दवाइयां एवं चश्मा	12 %	5%
थर्मामीटर	18 %	5%
मेडिकल ऑक्सीजन	12 %	5%
डायग्नोस्टिक किट, ग्लूकोमीटर व स्ट्रिप्स	12 %	5%

किसान एवं कृषि क्षेत्र

वस्तु	पहले	अब
ट्रैक्टर टायर	18 %	5 %
ट्रैक्टर	12 %	5 %
बायो-पेस्टिसाइड्स	12 %	5%
ड्रिप इरिगेशन, खेती मशीनें	12 %	5%

वस्त्र, कपड़ा एवं जूते

वस्तु	पहले	अब
पॉलिएस्टर, नायलॉन	18% / 12%	5 %
रेयान फाइबर और धागा	18% / 12%	5 %
कालीन, मैट्स, टॉवेल, लेस, कढ़ाई	12 %	5 %
₹2500 तक के जूते	12 %	5 %

इलेक्ट्रॉनिक्स

वस्तु	पहले	अब
एसी	28%	18%
टीवी (32 इंच से ऊपर)	28%	18%
मॉनिटर व प्रोजेक्टर	28%	18%
डिश वाशिंग मशीन	28%	18%

पर्यटन, ऊर्जा एवं उद्योग

वस्तु	पहले	अब
होटल ठहराव (₹7500 प्रतिदिन तक)	12 %	5 %
सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा उपकरण	12 %	5 %
सीमेंट	28 %	18%

हेण्डीक्राफ्ट एवं कला

वस्तु	पहले	अब
लकड़ी, पत्थर, धातु की मूर्तियाँ	12 %	5 %
हस्तशिल्प वस्तुएं	12 %	5 %
खिलौने, पेंटिंग्स	12 %	5 %

ऑटोमोबाइल

वस्तु	पहले	अब
हाइब्रिड कार डीजल हाइब्रिड कार	28%	18%
3 व्हीलर मोटरसाइकिल (350cc तक)	28%	18%
मालवाहक वाहन	28%	18%

राजस्थान संवाद

22 - 29 सितम्बर, 2025
जीएसटी बचत उत्सव

घटी जीएसटी मिला उपहार - धन्यवाद मोदी सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी